सितंबर 2022 ₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

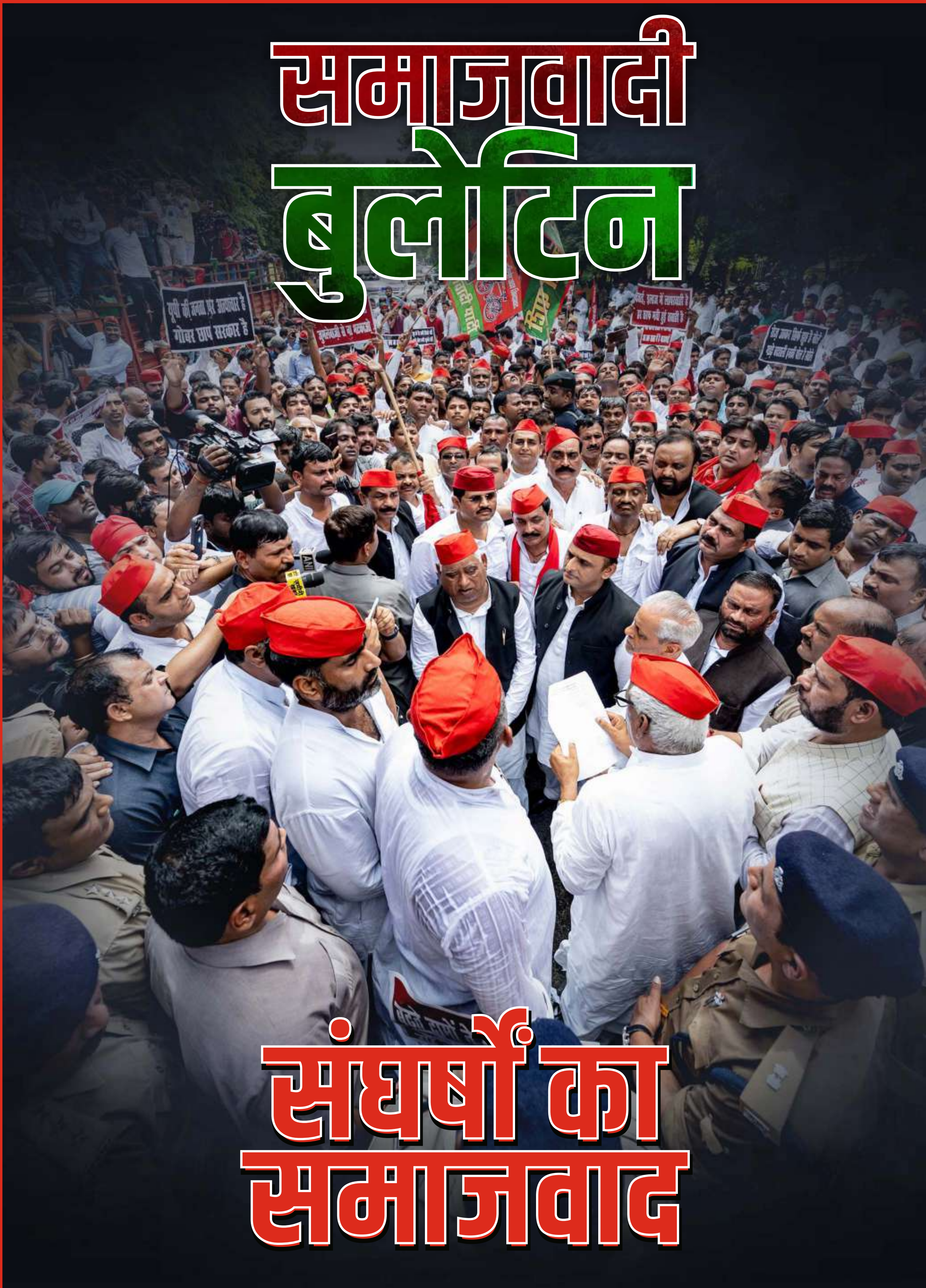

संघर्षों का समाजवाद

सभी को विकास के अवसर मिलें इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पर है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन
सितंबर 2022
वर्ष 23 | संख्या 11

प्रिय पाठकों,
आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन बदले हुए कलेवर में अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आपके उत्साहवर्धन और प्रेम के कारण ही हमारा यह सफर यहां तक पहुंचा है। हम भरोसा दिलाते हैं कि हम आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं आने देंगे। कृपया हमेशा की तरह आगे भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें।
धन्यवाद!

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

2024 में यूपी की रहेगी बड़ी जिम्मेदारी 28

06 कवर स्टोरी
संघर्षों का समाजवाद

बदलाव की आहट 26

वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए सियासी गतिविधियां तेज हो गई हैं। भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए विपक्षी दलों ने रणनीति बनाने का काम शुरू कर दिया है। समाजवादी विचारधारा की पार्टियों ने विपक्ष की तरफ से भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए ठोस पहल कदमी शुरुआत कर दी है।

जन मन की बात 04
अखिलेश के दौरे से पश्चिम के समाजवादी उत्साहित 44

जन मन की बात

उदय प्रताप सिंह

हर देश में, समाज में, परिवार में समस्याएं होती हैं, होती थी और होती रहेंगी। उन्हें वरीयता क्रम से लगाना और प्राथमिकता के अनुसार उनका हल निकालना उसके मुखिया की समझदारी की पहचान होती है।

अपने देश में यदि आज की तारीख में सरकारी सांख्यकी को माने तो 73 % देश की सम्पति 1% लोगों पर है। 56 करोड़ लोगों की औसतन आमदनी 20 और 35 ₹ प्रतिदिन है।

इसलिए हमारे देश की वरीयता क्रम में सबसे पहले समाधान चाहने वाली समस्याएं हैं ग़रीबी, बेरोजगारी,किसानों की हालत में सुधार, बच्चों की अच्छी पढ़ाई, दवाई,महंगाई और असमानता की निरन्तर बढ़ती खाई। इन पर तत्काल सरकारों को सोचना चाहिए। गिरती अर्थ व्यवस्था, डॉलर की तुलना में रुपये की अधोगति, बिजली-पानी, सुरक्षा , सड़कें जैसी मूलभूत सुविधाओं का तत्काल समाधान चाहिए।

फिर वे समस्याएं आती हैं जो हमारे जीवन के लिए खतरे की घंटी बजा रहीं हैं।

हाँ पलायनवाद में आराम ही आराम है
जिंदगी कठिनाइयों से जूझने का नाम है

इन समस्याओं पर क्या किसी नेता या सरकार की कोई ठोस योजना सामने आई?

एक समस्या है जो सब समस्याओं के निदान के लिए बहुत आवश्यक है। वह है राष्ट्रीय चरित्र। सच्चरित्रता के बीज अगली नस्लों में बोना है। इसके अभाव में ही भ्रष्टाचार होता है,महिलाओं को अपमानित किया जाता है, जाति-धर्म, लिंग, गांव शहर के आधार पर ऊंचनीच जैसे देश के अनेक कोढ़ पहले से हैं।

अब एक नई बीमारी समाज में फैल रही है कि भीड़ क़ानून हाथ में लेकर किसी को भी सजा स्वयं दे सकती है। पुलिस पहले देखती है कि किस पार्टी के लोग हैं फिर कार्यवाही होती है। यह व्यवस्था के पतन का लक्षण है जो उत्तम राष्ट्रीय चरित्र के अभाव से जन्मे हैं।

लोकतंत्र में असहमत को भी सम्मान देना होता है। यह लोकतंत्र की आधारशिला है। विपक्ष की बात में भी सार हो सकता है। सरकार के विरूद्ध प्रदर्शन शतप्रतिशत ग़लत

फोटो स्रोत : गूगल

लोकतंत्र में असहमत को भी सम्मान देना होता है। यह लोकतंत्र की आधारशिला है। विपक्ष की बात में भी सार हो सकता है। सरकार के विरूद्ध प्रदर्शन शतप्रतिशत ग़लत नहीं होते। उन्हें बलात् दबाने की चेष्टा लोकतंत्र में आत्महत्या जैसी भूल है

नहीं होते। उन्हें बलात् दबाने की चेष्टा लोकतंत्र में आत्महत्या जैसी भूल है। किसी राज्य या केंद्र की सरकार इन बातों पर आज कितना सोचती हैं? लोकतंत्र की सरकार की गुणवत्ता का पैमाना केवल यह होना चाहिए। लेकिन हो क्या रहा है यह टीवी चैनल बताते हैं। हर शाम 6-7 चैनल फिरकावाराना बहस करवाते हैं।

लोकतंत्र में में इतना सुझाव तो मैं सरकारों को दे ही सकता हूं कि आप जो राम मंदिर का अयोध्या में निर्माण कर रहें हैं, धारा 370 हटाई, इतिहास का पुनर्लेखन करवाया, घर वापसी, शहरों के नाम बदलने जैसे अपनी नज़र में महत्वपूर्ण काम कर रहें और कर लिये हैं, उसकी बधाई। आपका झंडा ऊंचा हो गया।

मेरी प्रार्थना केवल यह कि अब तो उन मूलभूत समस्याओं पर ध्यान दीजिए जिससे उस देश के लोग कुछ अच्छे दिनों का मंजर देखें। जिस देश को आप प्यार करने का दावा करते हैं उस देश में अमन चैन, खुशहाली आये। देश सीमाओं से घिरे धरती का क्षेत्रफल मात्र नहीं होता। उसमें रहने वाले लोग देश की असली संज्ञा की पहचान हैं। वे स्वस्थ, प्रसन्न, खुशहाल हैं तो देश खुशहाल माना जाता है।

जय हिंद!

भाजपा सरकार
र रही अत्याचार
जनता का पैसा है खाते
सरकार चलाते
बढ़ते दामों ने
झूठे चला रहे यूपी

संघर्षों का समाजवाद

समाजवादी पार्टी का संघर्षों का शानदार इतिहास रहा है। जन समस्याओं को लेकर पार्टी ने अपने गठन के बाद से लगातार निरंकुश सरकारों के खिलाफ सड़क पर उतर कर विरोध जताया है। श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी निरंतर संघर्षों के इसी शानदार विरासत का निर्वहन करती रही है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी जब सड़क पर उतरी तो दमनकारी सरकार ने दमन का रास्ता अपनाया लेकिन समाजवादियों का हौसला वह नहीं तोड़ पाई। पेश है समाजवादियों के संघर्ष की विस्तृत रिपोर्ट:

दुष्यंत कबीर

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री एवं विधानसभा में नेता विपक्ष श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के सभी विधानसभा और विधानपरिषद सदस्य व बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने 19 सितंबर को विभिन्न जनसमस्याओं को लेकर उत्तर प्रदेश विधानसभा की तरफ जब पैदल मार्च करना शुरू किया तो वर्तमान भाजपा सरकार दमन पर उतर आई लेकिन अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादियों ने बीच सड़क पर धरना देते हुए जबरदस्त विरोध दर्ज कराया। श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के विधायक बढ़ती बेरोजगारी, महंगाई, महिलाओं के शोषण, कानून व्यवस्था की बदहाली, शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र की दुर्व्यवस्था, बिजली संकट, नौजवानों के साथ हो रहे अन्याय, किसानों की समस्याओं और समाजवादी पार्टी नेताओं पर लगाए जा रहे फर्जी मुकदमों को लेकर विधानसभा सत्र की कार्यवाही में शामिल होने के लिए समाजवादी पार्टी कार्यालय से पैदल मार्च करते हुए निकले। पुलिस के रोके जाने पर समाजवादी पार्टी के सभी विधायक श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में सड़क पर बैठ गए।

सड़क पर सदन की कार्यवाही की शुरूआत श्री अखिलेश यादव द्वारा वंदे मातरम गीत के गायन के साथ हुई, जिसे सभी विधायकों ने दोहराया। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय ने स्पीकर की भूमिका निभाई। इसी कार्रवाई के दौरान विधायक श्री अरविन्द गिरि के निधन पर शोक प्रस्ताव रखकर विधायकों ने दो मिनट का मौन रखा।

इसके बाद कार्रवाई खत्म हो गई। फिर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने विधायकों के साथ पार्टी मुख्यालय पहुंच कर विधायकों की बैठक कर भाजपा सरकार के अलोकतांत्रिक रवैये की निंदा की।

सड़क पर धरने के दौरान अपने संबोधन में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने लोकतंत्र की हत्या की है। सदन की कार्यवाही में शामिल होना विधायकों का संवैधानिक और लोकतांत्रिक अधिकार है। लोकतंत्र में ऐसा कभी नहीं हुआ है कि सरकार भारी फोर्स लगाकर विधायकों को कार्यवाही में शामिल न होने दें। भाजपा सरकार इससे साबित कर रही है कि वह जनाक्रोश से डरकर कितना असुरक्षित महसूस कर रही है। सत्ता जितनी कमजोर होती है, दमन उतना ही अधिक बढ़ता है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार क्यों विपक्ष का सामना नहीं कर पा रही है? उन्होंने कहा कि सरकार हर मुद्दे पर असफल हुई है। लोकतांत्रिक मूल्यों को बचाने के लिए समाजवादी पार्टी इसी तरह सदन और सड़क का रास्ता अपनाएगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की गलत नीतियों से महंगाई इतनी बढ़ गयी है कि कल्पना नहीं की जा सकती है। जनता महंगाई से पिस रही है। दूध, दही, घी, तेल तक पर सरकार ने जीएसटी लगा दिया है। खाने, पीने की चीजों के दाम बहुत बढ़ गए हैं। महंगाई ने जनता की कमर तोड़ दी है।

भाजपा ने जनता को झूठे सपने दिखाए। बड़े पैमाने पर बेरोजगारी बढ़ी हैं। रोजगार नहीं दिये जा रहे हैं। नौजवानों के पास नौकरी, रोजगार नहीं है। सरकार रोजगार बढ़ाने की दिशा में कोई काम नहीं कर रही है। दलितों, पिछड़ों को संविधान में दिए गए अधिकार भाजपा सरकार छीन रही है।

भाजपा सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बर्बाद कर दिया है। राजधानी के बड़े-बड़े अस्पतालों समेत जिला चिकित्सालयों, सीएचसी, पीएचसी में गरीबों को दवाई, इलाज नहीं मिल रहा है। मरीजों की लम्बी-लम्बी लाईनें लगती हैं। जानवरों में बीमारी फैली है। गाय, भैंसों की बड़े पैमाने पर जान जा रही है। किसानों का नुकसान हो रहा है। सरकार ने बीमारी की रोकथाम का कोई उपाय नहीं किया है।

प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरी तरह से बर्बाद है। अपराध लगातार बढ़ रहे हैं। भ्रष्टाचार चरम पर है। सरकार हर विभाग को बेच रही है। रेलवे बिक गया, हवाई अड्डे, हवाई जहाज बिक गया, सरकार बड़े पैमाने पर निजीकरण कर नौकरी रोजगार खत्म कर रही है। उससे नौजवान संतुष्ट नहीं है। जो नौजवान इसके विरोध में निकले उन पर झूठे मुकदमें लगा दिए गए।

भाजपा सरकार ने किसानों को बर्बाद कर दिया। किसानों के गन्ना की बकाया कीमत चीनी मिलों द्वारा नहीं दी जा रही है। बिजली महंगी हो गयी है। बिजली के तार-जर्जर है। कई जगह लोगों की जाने चली गयी। सूखा और बाढ़ से हुए नुकसान पर सरकार ने कोई

राहत नहीं पहुंचाकर किसान विरोधी आचरण का परिचय दिया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी के विधायक विधानसभा में जाकर जनहित के सवालों को उठाना चाहते थे परन्तु भाजपा सरकार ने उन्हें सड़क पर ही क्यों रोक दिया है? आज जब हम लोग पैदल विधानसभा में जाना चाहते हैं, तब भी रोका गया। हमारे विधायकों और पूर्व मंत्रियों को जो कि कई-कई बार के विधायक हैं, पूर्व स्पीकर हैं, उन्हें भी सदन में नहीं जाने दिया जा रहा है। लोकतंत्र में यह बहुत ही निन्दनीय है। हम जनता की आवाज सदन से सड़क तक उठायेंगे। जनता 2024 में दमनकारी भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पित है।

बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार
किसान बचाओ, प्रदेश बचाओ
गोबर छाप सरकार हटाओ
भ्रष्टाचारी भाजपा सरकार
जनता पर कर रही अत्याचार

रोजगार दो, युवा बचाओ
जुमलेबाजी से ना भटकाओ
भ्रष्टाचारी भाजपा सरकार
जनता पर कर रही अत्याचार
बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार

17 पिछड़ी जातियों को
गुमराह मत करो
अनुसूचित जाति में
दवाई, इलाज में लापरवाही है
हर तरफ मची हुई तबाही है

बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार

रोज़ उठकर सिर्फ झूठ है बोले
गड्ढे बदहाली इनकी पोल है खोले
भाजपा बुरे दिन लाई है
कमर तोड़ती महंगाई है
बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार
बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार
भाजपा बुरे दिन लाई है
कमर तोड़ती महंगाई है
बेरोजगारो को रोजगार दो,
वर्ना गद्दी छोड़ दो।

जनता का पैसा है खाते
घपलेबाज़ सरकार चलाते
सच बोलने वालों से डरती सरकार
बढ़ते दामों ने मचाया हाहाकार
झूठे चला रहे यूपी की सरकार

सदन में अखिलेश के सवालों पर सरकार लाजवाब

बुलेटिन ब्यूरो

मॉनसून सत्र के दूसरे दिन 20 सितंबर को सपा अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने प्रदेश मे स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली को लेकर भाजपा सरकार पर करारा प्रहार किया। उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक को भी निशाने पर ले लिया। अखिलेश ने बगैर नाम लिए बृजेश पाठक को छापामार मंत्री करार दिया। उन्होंने कहा कि गरीब मरीजों को सुविधा नहीं मिल रही है। एम्बुलेंस नहीं मिलता। लोगों को इलाज के लिए दिल्ली, मुंबई जाना पड़ रहा है। लोग बोल रहे हैं कि स्वास्थ्य मंत्री अस्पतालों में जाते हैं और केवल छापा मारते हैं। केवल छापामार मंत्री बनोगे या कुछ काम भी करोगे। छापा मारने के बाद क्या तस्वीर बदली आपने जानने की कोशिश की?

अखिलेश यादव ने कहा यूपी के अस्पतालों में झोलाछाप डॉक्टर इलाज कर रहे हैं। मरीज चारपाई पर अस्पताल ले जाए जा रहे

हैं। अस्पतालों में पानी भरा हुआ है। ये सरकार डबल इंजन सरकार होने का दावा करती है लेकिन मंत्रियों के पास इन बातों का कोई जवाब नहीं है। सपा अध्यक्ष यहीं नहीं थमे। उन्होंने कहा कि यूपी में स्वास्थ्य सेवाओं की हालत खराब है। डॉक्टरों ने इलाज से हाथ खड़े कर दिए हैं। लापरवाही से मरीजों की जान जा रही है। कन्नौज के अस्पताल में कुत्ते ही कुत्ते देखे गए पिछले दिनों। कोरोना काल को कौन भूल सकता है जब यूपी के अस्पतालों की दुर्दशा सामने आई थी।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री को बजट नहीं दिया जा रहा है। ये सरकारी अस्पतालों को बंद करने की साजिश है। सरकार के पास स्टाफ की कमी है। ये निजीकरण करके सरकारी अस्पतालों में ताला लगाना चाहते हैं। मरीज ठेले पर अस्पताल ले जाए जा रहे हैं। ऐम्बुलेंस कहीं नहीं दिखाई दे रहे हैं। अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार बताए इलाज के लिए कितनी मशीनें खरीदी हैं। गोंडा में कस्टोडियल डेथ हुई, उसी दिन गोंडा के नवाबगंज में महिला को गलत इंजेक्शन लगा दिया गया जिससे उसकी मौत हो गई। क्या मेडिकल लापरवाही की वजह से मौत नही हो रही?

सपा विधायक पुलिसिया दमन के सामने डटे

बुलेटिन ब्यूरो

विभिन्न जनसमस्याओं को लेकर विधान भवन के सामने चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा के नीचे 14 सितंबर को क्रमिक धरना शुरू करने की समाजवादी पार्टी के विधायकों की घोषणा से बौखलाई भाजपा सरकार ने निरंकुश रवैया अपनाते हुए लोकतंत्र की हत्या करते हुए समाजवादी पार्टी के विधायकों, नेताओं, कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को रात से ही घरों में नज़र बंद कर दिया। घरों से बाहर पुलिस बैठा दी गई। किसी को घर से बाहर निकलने नहीं दिया गया। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, पूर्व मंत्री श्री अरविन्द सिंह गोप तथा विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री रविदास मेहरोत्रा को उनके घरो में नज़रबंद कर दिया गया।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय 19 विक्रमादित्य मार्ग लखनऊ के बाहर एकत्र हो रहे विधायकों तथा पार्टी नेताओं को पुलिस ने बलपूर्वक रोका। पुलिस और नेताओं की नोकझोंक भी हुई। पुलिस ने विधायकों और पूर्व विधायकों के साथ दुर्व्यवहार किया। उनके हाथ से नारे लिखी तख्तियां छीन लीं और उन्हें धक्का देकर बसों में ठूंस दिया गया। कई विधायक एवं नेता पुलिस की धक्कामुक्की से घायल भी हो गए।

विधायक एवं पूर्वमंत्री श्री मनोज कुमार पाण्डेय का पुलिस ने हाथ मरोड़ दिया। प्रदर्शन कर रहे समाजवादी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को पुलिस प्रशासन द्वारा जबरन बसो में बैठाकर इको गार्डेन ले जाया

दवाई, इलाज में लापरवाही
हर तरफ मची हुई है तबाही
नहीं घटेगी प्रदेश में महंगाई
जब तक सत्ता में है भाजपाई
विरोध करो सब ज़ोरो से
प्रदेश बचा लो चोरों से

नहीं घटेगी प्रदेश में महंगाई
जब तक सत्ता में है भाजपाई
दवाई, इलाज में लापरवाही
हर तरफ मची हुई है तबाही

गया। जहां वे भारी बारिश में पानी में भीगते रहे।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने शांतिपूर्ण ढंग से धरना देने जा रहे समाजवादी पार्टी विधायको, नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ पुलिस दुर्व्यवहार और गिरफ्तारी की कड़े शब्दों में निंदा की है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा लोकतंत्र की हत्यारी सरकार है। सरकार का रवैया पूरी तरह अलोकतांत्रिक और तानाशाहीपूर्ण है। जनता की समस्याओं और जनहित के मुद्दों को लेकर शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन विपक्ष का लोकतांत्रिक अधिकार है। भाजपा सरकार लगातार जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन कर रही है। प्रदेश में आपातकाल जैसे हालात है। जनता और विपक्ष की आवाज को कुचलने का षड्यंत्र है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार लोकतंत्र में जनता की आवाज को दबा रही है। जनता 2024 में भाजपा की इस तानाशाही सरकार को सबक सिखायेगी। समाजवादी सरकारी दमन से दबने या डरने वाले नहीं है।

जिन विधायकों, पूर्व विधायक को पुलिस ने गिरफ्तार किया उनमें सर्वश्री मनोज कुमार पाण्डेय विधायक ऊंचाहार (मुख्य सचेतक समाजवादी पार्टी विधानमण्डल दल), मोहम्मद फहीम इरफान विधायक बिलारी, राकेश प्रताप सिंह विधायक गौरीगंज, चन्द्र प्रकाश लोधी विधायक फतेहपुर, जाहिद बेग विधायक भदोही, राहुल लोधी विधायक हरचन्द्रपुर, अभय सिंह विधायक गोसाईगंज, गौरव रावत विधायक बाराबंकी, समर पाल सिंह विधायक अमरोहा, ऊषा मौर्या विधायक हुसैनगंज फतेहपुर, राजेन्द्र प्रसाद चौधरी विधायक बस्ती, धर्मराज यादव (सुरेश यादव) विधायक बाराबंकी, संदीप पटेल विधायक मेजा, महेन्द्र यादव विधायक बस्ती, मोहम्मद ताहिर इसौली सुल्तानपुर, बैजनाथ दुबे पूर्व विधायक, मुनीन्द्र शुक्ला पूर्व विधायक, सतीश निगम पूर्व विधायक, संतोष यादव सनी पूर्व एमएलसी, राजेश यादव पूर्व एमएलसी, आनंद भदौरिया पूर्व एमएलसी, उदयवीर सिंह पूर्व एमएलसी, उदयराज यादव पूर्व विधायक, आरिफ अनवर हाशमी पूर्व विधायक, डॉ राजपाल कश्यप पूर्व एमएलसी, राजेन्द्र यादव पूर्व विधायक बीकेटी लखनऊ आदि प्रमुख थे।

भगवान का सौदा करते हैं,
की कीमत क्या जाने ।
धान की
जान की कीमत क्या जाने ।।
रसोई गैस, डीजल-पेट्रोल के दामों में हुई
बेतहाशा वृद्धि वापस लो-वापस लो।

सदन से वॉकआउट, सड़क पर मार्च

बुलेटिन ब्यूरो

बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रों की बढ़ी फीस, बढ़ते अपराधों के विरोध में और किसानों के साथ हो रहे अन्याय और उनकी समस्याओं बाढ़, सूखा, खराब स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर समाजवादी पार्टी ने 23 सितंबर को विधानसभा की कार्यवाही शुरू होते ही नेता विरोधी दल श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में सदन से वॉकआउट किया।

सदन से वॉकआउट कर समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोक दल के विधायकों ने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में इन्हीं मुद्दों को लेकर विधान भवन से रवाना होकर राजभवन के सामने से होते हुए विक्रमादित्य मार्ग स्थित समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय तक पैदल मार्च किया।

समाजवादी पार्टी प्रदेश मुख्यालय पहुंच कर श्री अखिलेश यादव ने विधायकों और पार्टी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि विधानसभा में समाजवादी पार्टी ने जब-जब जनता के मुद्दों महंगाई, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था का मामला उठाया, सरकार ने अनसुना किया। आज भी भाजपा सरकार का व्यवहार उपेक्षापूर्ण रहा।

पुलिस उत्पीड़न
भगवान का सौदा करते हैं,

पुलिस उत्पीड़न

सदन से वॉकआउट इसलिए किया क्योंकि समाजवादी पार्टी और सभी विपक्षी दल मांग करते रहे कि सदन का समय बढ़ाया जाए क्योंकि सदन में समय कम दिया गया है। जनता से जुड़े बहुत सारे मुद्दे हैं, उन पर बहस नहीं हो पायी। सरकार का जवाब संतुष्ट करने वाला नहीं रहा। सरकार के रवैये के खिलाफ सदन से वॉकआउट किया गया है। श्री यादव ने कहा कि समाजवादियों का भाजपा के अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष सदन से सड़क तक जारी रहेगा। जनता भाजपा का हर स्तर पर मुकाबला करने के लिए तैयार है।

आजम साहब का उत्पीड़न

सपा ने सदन में जोर-शोर से उठाया मुद्दा, राज्यपाल को ज्ञापन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक मोहम्मद आजम खान साहब के खिलाफ उत्तर प्रदेश सरकार के उत्पीड़नात्मक रवैए एवं उन पर फर्जी मुकदमे लादने पर सपा के विधायकों ने विधानमंडल के मानसून सत्र के दौरान 21 सितंबर को दोनों सदनों में जबरदस्त विरोध दर्ज कराया।

वहीं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में विधायकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने आजम साहब पर सरकार के इशारे पर द्वेष भावना से लगाए जा रहे झूठे और फर्जी मुकदमों को लेकर दिनांक 23 सितंबर को महामहिम राज्यपाल महोदया से मुलाकात की और ज्ञापन सौंपा।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव नेसदन में कहा कि प्रदेश सरकार आजम खान साहब को घेरने की कोशिश कर रही है। मुझे डर है कि कहीं उनकी यूनिवर्सिटी से बम और एके-47 न बरामद कर लिए जाएं। नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि जिस तरह उप मुख्यमंत्री को काला झंडा दिखाने वाले युवक के पास बम मिलना बताते हुए उसे जेल भेज दिया गया कहीं ऐसी ही कार्यवाही सपा विधायक आजम खान के यहां न हो।

समाजवादी पार्टी ने विधानसभा में कार्यस्थगन प्रस्ताव के तहत आजम खान साहब के खिलाफ पुलिस की ओर से की जा रही झूठी कार्रवाई का मुद्दा उठाया। इस मुद्दे पर विधान परिषद में सपा सदस्यों के हंगामे के कारण उच्च सदन की बैठक दो बार में एक घंटे के लिये स्थगित करनी पड़ी।

विधान सभा में सपा सदस्यों ने आजम खान सहित उन तमाम विधायकों को फर्जी मुकदमों में फंसाने का आरोप लगाया जो सरकार के खिलाफ मुखरता से आवाज उठा रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि जब सदन के किसी सदस्य को ही न्याय नहीं मिलेगा तो किसी और को कहां न्याय मिलेगा।

सपा के वरिष्ठ सदस्य माता प्रसाद पांडेय ने आजम खान के खिलाफ हो रही कानूनी कार्रवाई को बदले की भावना और राजनीति से प्रेरित बताया। श्री पांडेय ने कहा कि आजम खान इस सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं। उन्हें न सिर्फ दो साल जेल में रखा गया। बल्कि उनके खिलाफ पेशेवर अपराधियों जैसा बर्ताव किया गया। जमानत पर होने के बावजूद उनके खिलाफ फर्जी मुकदमे लिखे जा रहे है। यही नहीं सरकार उनकी जमानत तक खारिज कराने के लिए प्रयासरत है। जौहर विवि की खुदाई कराकर उसमें नगरपालिका की मशीनें बरामद कर उनके खिलाफ चोरी के नए-नए मुकदमे लिखे जा रहे है। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष से इस मामले में हस्तक्षेप करने की मांग करते हुए कहा कि आजम खान के खिलाफ फर्जी मुकदमे लिखने बंद कराये जायें।

उच्च सदन विधान परिषद में भी सपा सदस्यों ने आजम खान के उत्पीड़न का मामला उठाया। सदन की बैठक शुरु होने पर सपा के वरिष्ठ सदस्य नरेश उत्तम पटेल ने विरोधी दल के विधायकों के खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज किये जाने का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में विपक्ष के लोगों का अपमान किया जा रहा है।

सपा सदस्य नारेबाजी करते हुए आसन के समीप आ गये। सपा सदस्यों कहना था कि आजम खान के पूरे परिवार को संगीन मामलों में फंसाया गया है। सपा सदस्यों ने कहा कि सरकार की तानाशाही के चलते जनप्रतिनिधियों को प्रताड़ित किया जा रहा है।

नहीं घटेगी प्रदेश में महंगाई
भाजपा बुरे दिन लाई है
कमर तोड़ती महंगाई है
सिर्फ झूठ है बोले
इनकी पोल है खोले
बढ़ते दामों ने मचाया
झूठे चला रहे यूपी की
नहीं घटेगी प्रदेश
जब तक सत्ता में
सरकार मस्त है।

बदलाव की आहट

वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए सियासी गतिविधियां तेज हो गई हैं। भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए विपक्षी दलों ने रणनीति बनाने का काम शुरू कर दिया है। समाजवादी विचारधारा की पार्टियों ने विपक्ष की तरफ से भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए ठोस पहल कदमी शुरुआत कर दी है। बिहार में भाजपा को सत्ता से बाहर कर समाजवादी विचारधारा की सरकार बनाना इस दिशा में सार्थक प्रयास साबित हो रहा है। बदलाव की इस तेज होती आहट का असर उत्तर प्रदेश में भी दिखने लगा है जहां समाजवादी पार्टी सड़क पर उतर कर भारतीय जनता पार्टी को जन समस्याओं के मुद्दे पर लगातार घेर रही है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि 2024 में उत्तर प्रदेश की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होने जा रही है। पेश है 2024 के चुनाव के पहले की सियासी हलचल पर खबरों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण:

लोकसभा चुनाव में यूपी की बड़ी जिम्मेदारी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार देश को बर्बाद कर रही है। भाजपा सरकार देश को पीछे ले जा रही है। भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए जनता तैयार खड़ी है। भाजपा 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों के बाद सत्ता से बाहर जाएगी। भाजपा की हरकतों से जनता तंग आ चुकी है। अब जनता भाजपा को आगे बर्दाश्त नहीं करेगी। 2027 से पहले जनता भाजपा को वर्ष 2024 में ही निपटा देगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा षड्यंत्रकारी और भ्रष्टाचारी है। भाजपा सरकार में अंधेरगर्दी का बोलबाला है। जनता भाजपा से खुश नहीं है। समाज का हर वर्ग असंतुष्ट और दुखी है। समाज में नफरत फैलाई जा रही है। भाजपा सरकार के कारनामों के कारण जनता ने भी तय कर लिया है कि वह 2024 में भाजपा सरकार की विदाई अवश्य करेगी।

श्री यादव ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की बड़ी जिम्मेदारी है। समाजवादी पार्टी जनता के बीच जाएगी और जनता को बताएगी कि जो दूसरे राजनीतिक दल हैं वह सिर्फ वोट काटने के लिए चुनाव लड़ रहे हैं। श्री यादव ने कहा कि जनता सब देख रही है वह जानती है कि कौन दल भाजपा से मिले हुए हैं और कौन भाजपा

सपा के राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारियां तेज

2024 पर निगाहें

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी का राज्य सम्मेलन 28 सितम्बर 2022 को तथा राष्ट्रीय सम्मेलन 29 सितंबर 2022 को राजधानी लखनऊ में सम्पन्न होगा। देश-प्रदेश की राजनीतिक-आर्थिक स्थिति पर प्रस्ताव पारित करने के अतिरिक्त सम्मेलन में समाजवादी पार्टी की अपनी भूमिका की दिशा भी सुनिश्चित होगी।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने यह घोषणा करते हुए कहा कि जिस तरह से भाजपा ने राजनीतिक एवं आर्थिक संकट पैदा किया है और लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ खिलवाड़ किया है उससे निबटने के लिए इन सम्मेलनों में पार्टी की कारगर भूमिका के बारे में चर्चा होगी। 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों में पार्टी की रणनीति पर भी गहन चर्चा होगी। सम्मेलन में राष्ट्रीय एवं प्रदेश अध्यक्ष का भी निर्वाचन होगा।

उल्लेखनीय है कि इन दिनों समाजवादी पार्टी का सदस्यता अभियान चल रहा है। जुलाई से प्रारंभ सदस्यता अभियान में बहुत बड़ी तादाद में लोग सदस्य बन रहे हैं। पार्टी के सक्रिय सदस्यों से ही सम्मेलन के प्रतिनिधि चुने जाएंगे।

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के संगठनात्मक चुनावों को संपन्न कराने के लिए चुनाव अधिकारी की जिम्मेदारी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो रामगोपाल यादव को सौंपी गई है।

राज्य एवं राष्ट्रीय सम्मेलन में लोकतांत्रिक संस्थाओं को भाजपा द्वारा कमजोर किए जाने, अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट, राजनीतिक दल बदल को बढ़ावा देने तथा सामाजिक सद्भाव को खतरे में डालने पर भी विशेष चर्चा होगी। उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति, शिक्षा-स्वास्थ्य क्षेत्र की बदहाली, बढ़ते भ्रष्टाचार और किसानों-नौजवानों के साथ धोखा आदि मसलों पर राजनीतिक-आर्थिक प्रस्तावों में प्रकाश डाला जाएगा।

से लड़ रहे हैं।

श्री यादव ने कहा कि विपक्षी एकता के लिए वैसे राष्ट्रीय स्तर पर तेलंगाना के मुख्यमंत्री श्री केसीआर, एनसीपी अध्यक्ष श्री शरद पवार और पश्चिम पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी लगातार प्रयास कर रही है। इधर बिहार में समीकरण बदला है और वहां के नेता भी प्रयास कर रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा देश की सबसे बड़ी झूठी पार्टी है इससे बड़ा झूठ कोई नहीं बोल सकता है। भाजपा अंग्रेजों की तरह 'डिवाइड एंड रूल' की रणनीति पर काम करती है। भाजपा जनता को धर्म और जाति में तो लड़ाती ही है साथ में विपक्षी दलों को भी आपस में लड़ाने की रणनीति पर काम करती है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने सबसे बड़ा छल तो नौजवानों के साथ किया। दो करोड़ नौकरी देने का वादा किया पर एक लाख को भी नौकरी नहीं दी। उद्योगधंधे फाइलों में चल रहे है। नौकरी के नाम पर नौजवानों को सिर्फ भटकाया गया है। परीक्षाओं में धांधली आम बात हो गई है। युवा बेरोजगारों की फौज को राष्ट्र की प्रगति और विकास में भागीदारी से जानबूझकर वंचित किया जा रहा है। भाजपा सरकार की रुचि संविदा और आउटसोर्स के धंधे को बढ़ावा देकर युवाओं को पूंजीपतियों का गुलाम बनाने की हैं।

भाजपा सरकार की इन हरकतों को आखिर जनता कब तक बर्दाश्त करेगी? 2024 में जनविरोधी भाजपा सरकार को सत्ता से बाहर करने के लिए जनता को मिलकर तैयार रहना है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा के इशारे पर यूपी के विधानसभा चुनावों के लिए बने फाइनल वोटर लिस्ट में रणनीति के तहत मतदाताओं के नाम काटे गए। खासकर यादव और मुस्लिम मतदाताओं के वोट काटे गए। चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है कि जो वोटर बन गया है वह फाइनल वोटर लिस्ट में न कटे। यूपी विधानसभा चुनाव में काफी मतदाता या तो वोट नहीं डाल पाए या सूची में उनका नाम नहीं था। चुनाव आयोग बताएं कि उत्तर प्रदेश में कितने लोग वोट नहीं डाल पाए।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने सभी को धोखा देने का काम किया है। भाजपा सरकार किसानों-नौजवानों के साथ किए गए वादे नहीं निभा रही हैं। महंगाई की मार ने जनसामान्य की कमर तोड़ दी है। रोजमर्रा की चीजों के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। खाद-बीज कीटनाशक, कृषियंत्र सभी महंगे हो गये हैं। यूरिया खाद की बोरी से 5 किलो खाद कम कर दी गई पर दाम कम नहीं हुए।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा के खिलाफ जनता में भारी आक्रोश पनप रहा है। लोग भाजपा की वादाखिलाफी और धोखे की राजनीति से वाकिफ हो चुके हैं। भ्रष्टाचार थम नहीं रहा है। कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती जा रही है। भाजपा सरकार के खिलाफ राष्ट्रव्यापी असंतोष पनप रहा है। जनता ने अब भाजपा को सबक सिखाने का पक्का इरादा कर लिया है।

फाइल फोटो

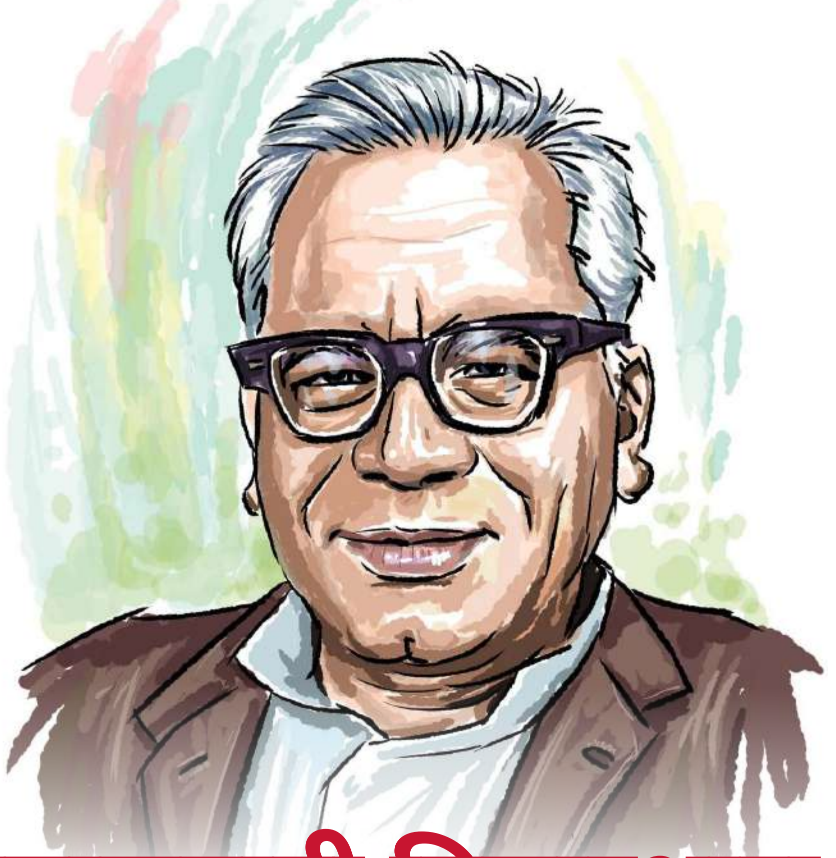

समाजवादी विचारधारा ही जोड़ेगी विपक्ष को

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

जनता दल (यू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह का यह कथन बहुत मायने रखता है कि, "अगर नीतीश कुमार और अखिलेश यादव मिल गए तो पिछले चुनाव में उत्तर प्रदेश में अपना दल के साथ मिलकर 64 सीटें पाने वाली भाजपा अगले चुनाव यानी 2024 में 20 सीटों पर सिमट जाएगी।" इधर समाजवादी पार्टी ने कहा है कि नीतीश कुमार उत्तर प्रदेश की किसी भी सीट से लड़ सकते हैं।

यह महज हवाई किले बनाए जाने की बात नहीं है बल्कि विपक्षी एकता को लेकर समाजवादी विचारधारा में यकीन करने वाले दलों का ठोस प्रयास है। नीतीश कुमार के भाजपा का साथ छोड़ने के कदम से समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव बहुत खुश हैं। उन्होंने इस खुशी का इजहार करते हुए कहा भी है कि मैं बहुत खुश हूं कि नीतीश कुमार ने तेजस्वी यादव के साथ मिलकर बिहार और देश को बचाने के लिए ऐसा कोई कदम उठाया। अब भाजपा को जनता की अदालत में विपक्ष का सामना करने को तैयार रहना चाहिए।

बिहार की बदली हुई स्थितियों और देश में विपक्षी एकता के लिए तेज होती गतिविधियों की आहट से समाजवादी नेता उत्साहित हैं। यह उत्साह अखिलेश यादव के बयान में जाहिर है। इसलिए वे आशान्वित हैं कि अगर विपक्ष का एजेंडा स्पष्ट हो तो वे 2024 में भाजपा को हरा सकते हैं। जिस विपक्षी एजेंडा की बात अखिलेश यादव ने की है उसका माहौल राष्ट्रीय स्तर पर बनने भी लगा

है। पंजाब के किसान फिर आंदोलन की तैयारी कर रहे हैं। उनका कहना है कि कारपोरेट-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गठजोड़ के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई के लिए अगले अट्ठारह महीने बहुत अहम होने जा रहे हैं। वे राज्यपालों के आवास के बाहर प्रदर्शन करेंगे।

रोजगार, एमएसपी की मांग के साथ देश के कारपोरेटीकरण के विरुद्ध मजबूत लड़ाई होगी ताकि 2024 में देश पर यह गठजोड़ फिर से हावी न हो पाए। वे अपने 380 दिनों के सशक्त आंदोलन से हुई तीन कृषि कानूनों की वापसी से बहुत उत्साहित हैं। लेकिन उसी के साथ वे देख रहे हैं कि संघ-कारपोरेट का गठजोड़ हार मानने वाला नहीं है। वह अपनी औपनिवेशिक योजना में लगा हुआ है। ऐसे में किसान आंदोलन भी एक समाजवादी एजेंडे के साथ देश के सामने उपस्थित होने जा रहा है। यह एजेंडा तभी पूरा हो सकता है जब दलित, आदिवासी, पिछड़े और अल्पसंख्यकों को उनका संवैधानिक हक मिले। उन पर पूंजीपतियों और बड़ी जातियों को प्राथमिकता देने का सिलसिला बंद हो।

शायद यह समाजवादी रणनीति ही होगी कि भाजपा को सांप्रदायिक मैदान पर घेरने की बजाय आर्थिक और सामाजिक न्याय के मैदान पर घेरा जाए। क्योंकि यह ऐसी पिच है जिस पर उन्हें हराया जा सकता है। क्योंकि सांप्रदायिक एजेंडा की पिच पर वे हिंदू मुस्लिम आख्यान चलाकर चुनाव जीत लेते हैं।

इस जीत के बाद वे न सिर्फ अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करते हैं बल्कि जो भी उनका विरोध करता है उसे भ्रष्ट, देशद्रोही या अर्बन नक्सल बताकर जेलों में डाल देते हैं। यह ध्यान रखने की बात है कि पंजाब से उठे जिस किसान आंदोलन ने केंद्र सरकार को झुकने के लिए बाध्य कर दिया उसमें समाजवादी समूहों की प्रधानता रही है। लेकिन वे अपने समाज और उसके संगठनों से गहराई से जुड़े हैं इसीलिए उन्हें कामयाबी मिल सकी है।

शायद यह समाजवादी रणनीति ही होगी कि भाजपा को सांप्रदायिक मैदान पर घेरने की बजाय आर्थिक और सामाजिक न्याय के मैदान पर घेरा जाए। क्योंकि यह ऐसी पिच है जिस पर उन्हें हराया जा सकता है। क्योंकि सांप्रदायिक एजेंडा की पिच पर वे हिंदू मुस्लिम आख्यान चलाकर चुनाव जीत लेते हैं

विपक्षी समूहों को उसी ढर्रे पर चलकर चुनावी कामयाबी हासिल करने के लिए न सिर्फ महंगाई और बेरोजगारी का सवाल उठाना होगा बल्कि जाति जनगणना के प्रश्न को भी नए संदर्भ में उठाना होगा। जाति जनगणना उन तमाम विभाजनकारी रणनीतियों का जवाब होगी जो अन्य पिछड़ा वर्ग को विभाजित करने और आपस में लड़ाने के लिए उठाई जाती हैं।

पिछड़े समाजों का झगड़ा मिटाने के लिए ही समाजवादी नेता कर्पूरी ठाकुर ने मुंगेरीलाल आयोग की रिपोर्ट के आधार पर अति पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को मजबूत पिछड़ी जातियों के आरक्षण से अलग करने का फार्मूला अपनाया था। उसी फार्मूले पर चलकर नीतीश कुमार ने महादलितों को आरक्षण दिया और 2005 से बिहार में अपनी सत्ता कायम रख सके हैं।

लेकिन चूंकि कर्पूरी ठाकुर और नीतीश कुमार के पास जातियों के सटीक आंकड़े नहीं थे इसलिए उनके जनाधार में सेंध लगाने में भाजपा कामयाब होती जा रही है। भाजपा ने 2011 में शहरी मंत्रालय के तहत हुई जाति जनगणना के आंकड़ों को उजागर नहीं किया लेकिन उसे अपने पक्ष में इस्तेमाल कर लिया। उन्हीं आंकड़ों के आधार पर वे सोशल इंजीनियरिंग का खेल खेल रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि अब मंडल का एजेंडा फिर से चलने वाला नहीं है।

लेकिन जाति जनगणना की मांग के साथ अगर समाजवादी विचार की केंद्रीय भूमिका के साथ 2024 में विपक्षी दलों की सरकार बनती है यानी विपक्षी दल सत्ताधारी दल बनते हैं तो इस जनगणना के माध्यम से अफवाहों, झूठे फार्मूलों पर टिका भाजपा का फर्जी पिछड़ा प्रेम उजागर किया जा सकता है। अगर उन आंकड़ों के साथ सामाजिक न्याय की सटीक राजनीति की गई तो संघ परिवार का नफरती ताना बाना बिखर सकता है।

यही वजह है कि विधानसभा चुनाव से लेकर अब तक समाजवादी पार्टी जाति जनगणना पर डटी हुई है। वहीं, उसकी सबसे बड़ी और सार्थक पहल कर नीतीश कुमार अपने मंत्रिमंडल से प्रस्ताव पारित कर कर चुके हैं। नीतीश कुमार बिहार भाजपा समेत कई दलों के साथ इस बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर चुके हैं। वहीं, भाजपा ने इस मांग को स्वीकार करने से मना कर दिया है। उनका कहना है कि एक तो यह गणना

सटीक तरीके से की नहीं जा सकती और दूसरे इससे समाज विभाजित होगा।

एक और महत्त्वपूर्ण समाजवादी एजेंडा पिछड़े राज्यों को विशेष दर्जा दिलाए जाने का है। नीतीश कुमार ने उस प्रसंग को छेड़ दिया है। विपक्षी नेताओं से मिलने के लिए दिल्ली दौरे के समय उन्होंने यह कह दिया है कि अगर केंद्र में विपक्षी दलों की सरकार बनी तो बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड जैसे पिछड़े राज्यों को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाएगा। मोदी सरकार इस तरह का आश्वासन चुनाव में देती है लेकिन इसे उसी तरह भुला देती है जैसे उसने हर नागरिक के खाते में 15 लाख रुपए डालने के दावे को एक जुमला बताया। नीतीश कुमार का यह एजेंडा भारत के संघीय ढांचे को पुनर्जीवित कर सकता है और एक देश, एक विधान और एक निशान वाले संघी नारे को धता बता सकता है।

आज देश के भीतर एक प्रकार का आंतरिक उपनिवेशवाद पनप रहा है। उसका एक नमूना हाल में वेदांत-फॉक्सकॉन विवाद के दौरान दिखा। इन दोनों कंपनियों ने महाराष्ट्र ने अपना सेमीकंडक्टर का प्लांट लगाने का फैसला लगभग ले लिया था लेकिन केंद्र सरकार के दबाव में उसे गुजरात जाना पड़ा। यह प्रक्रिया पूरे देश में आर्थिक और राजनीतिक सभी मोर्चों पर देखी जा रही है। गुजरात के राजनेता, उद्योगपति और अधिकारी संविधान के संघीय स्वरूप को रौंदकर पूरे देश पर गुजरात का माडल थोप रहे हैं और देश के विभिन्न राज्यों का दोहन और शोषण करके अपने क्षेत्र को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने में लगे हैं। यानी पूरा देश गुजरात राज्य और वहां से आने वाले नेताओं के अधीन होता जा रहा है।

फोटो स्रोत : गूगल

देश के विभिन्न इलाकों को विकास का समान अवसर नहीं मिल रहा है। जहां दक्षिण के राज्यों के साथ संसद की सीटों के मामले में अन्याय हो रहा है वहीं उत्तर और दक्षिण के राज्यों पर गुजरात और महाराष्ट्र का दबदबा तेजी से बढ़ रहा है। महाराष्ट्र का दबदबा इसलिए क्योंकि वहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का केंद्र है। उसकी उत्पत्ति वहां हुई। वह मराठी लोगों के साथ साथ चितपावन ब्राह्मणों के नियंत्रण में लंबे समय तक रहा है। जबकि गुजरात का देश पर अधिपत्य इसलिए कायम हुआ है क्योंकि एक ओर तो सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा के दौरान पूरे देश पर सोमनाथ के इतिहास और वर्तमान से जुड़े आख्यान को लादने की कोशिश की गई। दूसरी ओर गुजरात के पूंजीपतियों ने जिस तरह वाइब्रेंट गुजरात के माध्यम से भाजपा और नरेंद्र मोदी के पीछे पूरे कारपोरेट को एकजुट किया वह भी अपने में एक मिसाल है।

जाहिर सी बात है कि नव उदारवाद की विचारधारा ने उग्र हिंदुत्व को उभारने और उसे अपनी मजबूती के लिए इस्तेमाल करने का काम किया है। दोनों ने एक गठजोड़ निर्मित किया है और उसके माध्यम से भारतीय लोकतंत्र को हड़प लेने का कार्यक्रम तैयार किया है। वे सेंट्रल विस्टा के कर्तव्य पथ पर अधिकार पथ और जनपथ को दफन करने की तैयारी कर चुके हैं। बस जरूरत है उसके स्मारक की। तुर्की की पत्रकार इके तेमलकुरन ने हाल में एक पुस्तक लिखी है 'हाउ टू लूज ए कंट्री।'

इस किताब में उन्होंने बताया है कि किस तरह से तैयप एरडोगन ने दो दशक के भीतर तुर्की के लोकतंत्र को निगल लिया। उन्होंने बताया है कि तुर्की समेत हंगरी, ब्राजील की सरकारों ने सात कदमों के माध्यम से लोकतंत्र को नष्ट करने का काम किया है।

उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने के साथ अपना एक समर्थक वर्ग तैयार लिया है जो उनके इन कदमों को जरूरी मानता है। जाहिर सी बात है कि यह समर्थक

वर्ग इस नवउदारवादी अर्थव्यवस्था के तहत तैयार किया गया है। वही अर्थव्यवस्था जो कोरोना काल में लोगों की नौकरियां छीनती है उन्हें भुखमरी के कगार पर ला खड़ा करती है और फिर सरकार के राशन पर निर्भर रहने को मजबूर कर देती है। इस दौरान जनता के तमाम अधिकार छीन लिए जाते हैं। दूसरी ओर इसी दौरान याराना पूंजीवाद तेजी से बढ़ता है और उसका एकाधिकार मजबूत होता है। इस समय कुछ पूंजीपतियों की संपत्ति राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी तेजी से बढ़ती है।

हिंदुत्व और पूंजीवाद की इस मिली जुली योजना ने एक ऐसा मध्य वर्ग तैयार कर लिया है जिसे लोकतंत्र की आवश्यकता नहीं है। उसे राज्यों की स्वायत्तता की आवश्यकता भी नहीं है। उसे सभी के समान विकास की जरूरत भी नहीं है। वह इस बात से भी चिढ़ता है यह कैसा लोकतंत्र है कि इसमें हर तबके को वोट का अधिकार दे दिया गया है और अमीरों के वोट की कीमत भी गरीबों के वोट जैसी है।

वह गरीबों के वोट खरीद लेता है। उन्हें डरा धमका का उनका वोट किसी और से डलवा भी देता है फिर भी उन्हें इस बात का खौफ है कि देश के आम आदमी में लोकतंत्र की बढ़ती ललक कभी भी उन्हें सत्ता से बेदखल कर सकती है। इसके लिए वे अल्पसंख्यकों को मतदान से बाहर करने की तैयारी कर रहे हैं। उसके पहले कदम के तौर पर चुनाव क्षेत्र का इस प्रकार से पुनर्गठन कर रहे हैं कि उनके वोटों का मतलब ही न रह जाए। ऐसा ही वे पिछड़ों और दलितों के साथ करने वाले हैं।

भारत में लोकतंत्र की स्थापना में समाजवादियों का बड़ा योगदान रहा है। कम्युनिस्ट पार्टियां बराबरी की बात तो करती थीं लेकिन उनके जेहन से सर्वहारा की तानाशाही की अवधारणा उतरी ही नहीं थी।

इस मिलीजुली योजना ने एक ऐसा मध्य वर्ग तैयार कर लिया है जिसे लोकतंत्र की आवश्यकता नहीं है। उसे राज्यों की स्वायत्तता की आवश्यकता भी नहीं है। उसे सभी के समान विकास की जरूरत भी नहीं है। वह इस बात से भी चिढ़ता है यह कैसा लोकतंत्र है कि इसमें हर तबके को वोट का अधिकार दे दिया गया है और अमीरों के वोट की कीमत भी गरीबों के वोट जैसी है। वह गरीबों के वोट खरीद लेता है

आज भी वह इस रूप में बैठी है कि उनके शीर्ष नेता अगर लोकतंत्र को बचाने की बात करते हुए इस सिद्धांत से छुटकारा पाने की बात करते हैं तो उन्हें पार्टी से हटना पड़ता है। भाकपा माले की शीर्ष नेता कविता कृष्णन ने हाल में पार्टी के पोलित ब्यूरो से इसी आधार पर इस्तीफा दिया क्योंकि पार्टी सर्वहारा की तानाशाही के सिद्धांत को छोड़ने और स्टालिन की आलोचना करने को तैयार नहीं थी। दूसरी ओर कांग्रेस ने भी इंदिरा गांधी के नेतृत्व देश में आपातकाल लागू कर दिया था और पंडित जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल में ही केरल की नंबूदिरीपाद की चुनी हुई सरकार गिरा दी गई थी।

तमाम तरह के मतभेदों और टूटन के बावजूद समाजवादियों ने कभी तानाशाही का समर्थन नहीं किया। उन्होंने दूसरे दलों द्वारा तानाशाही लाए जाने के अलावा अपनी पार्टियों में भी किसी प्रकार की तानाशाही का सदैव विरोध किया। आज जरूरत इस बात की है कि पूंजीवाद के बेहद असमान स्वरूप के विरुद्ध बराबरी का आंदोलन छेड़ा जाए और उसे चुनावी राजनीति में मुद्दा बनाया जाए। इसी के साथ राज्यों की स्वायत्तता के लिए सरकारिया आयोग की सिफारिशों को लागू किए जाने की मांग की जाए।

सभी समाजवादी इस बात पर विचार करें कि अगर उनकी सरकार बनी तो वे तानाशाही के खतरे को रोकने के लिए संवैधानिक संस्थाओं को कैसे मजबूती प्रदान करेंगे। देश के जाने माने समाजशास्त्री सतीश देशपांडे ने सही ही कहा है कि भले ही तुर्की की पत्रकार इके तेमलकुरन की किताब में भारत का जिक्र नहीं है लेकिन वह किताब भारत को आइना दिखाने का काम करती है। यह किताब लोकतंत्र को समाप्त करने के सात चरणों की बात करती है। वे सात कदम सत्पपदी की तरह से हैं। वे पूरे हों इससे पहले इस चक्रव्यूह को तोड़ देना आवश्यक है। आशा की जानी चाहिए कि समाजवादियों की नैतिक लड़ाई इस व्यूह को तोड़ सकेगी।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

फाइल फोटो

मोदी का समाजवादी विकल्प संभव है

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

इस लेखक जैसे काफी लोग होंगे जिन्हे अखिलेश यादव के मुंह से 'हम समाजवादी' शब्द सुनना अच्छा लगता है। उनकी देखा देखी अब उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी के काफी सारे लोग इसका प्रयोग करते हैं। समाजवादी पद या विशेषण का इस्तेमाल आजकल बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

भी करते हैं, पर अखिलेश यादव की तरह खुले तौर पर और अक्सर नहीं। लालू प्रसाद यादव और उनके संभावनायुक्त पुत्र तेजस्वी यादव भी इसी समाजवादी बिरादरी के हैं और एक मजबूत पार्टी चला रहे हैं। इस बार चाचा नीतीश को बड़ी कुर्सी देने के बाद तेजस्वी भी उनको केंद्र में भेजकर बिहार का शासन चाहते हैं। उनके लिए मंडल नरेंद्र मोदी की पराजय और बड़ा मुद्दा है क्योंकि यही परिवार उनके सामने सीना तानकर खड़ा रहा है।

तेजस्वी तथा लालू यादव के बड़ा दल होने के बावजूद झुककर नीतीश को गद्दी देने के फैसले ने ही एक बार फिर से मोदी विरोध की राजनीति को हवा दी है। इसमें एक नई संभावना और ऊर्जा दिखती है और अपने स्वभाव के विपरीत नीतीश कुमार दिल्ली के लिए सचमुच का प्रयास करते दिखते हैं। वरना इसके पहले ममता बनर्जी और के. चंद्रशेखर राव ही नहीं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल भी मोदी के विकल्प का गठजोड़ करने का प्रयास कर रहे थे लेकिन किसी तरफ उत्साह नहीं दिख रहा था।

कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी ने अपना दावा नहीं छोड़ा है लेकिन अब उनकी और कांग्रेस की राजनीति ऐसी हो गई है जिसका टकराव इस नए दिख रहे गठबंधन से नहीं होगा। नीतीश की पहल का जिस तरह अन्य दलों ने स्वागत किया है और जिस तरह उन्होंने सोनिया गांधी से भेंट करके माहौल बनाया है उसका भी असर दिख रहा है। इसमें काफी लोगों को मोदी विरोध के साथ मंडल पार्ट 2 की शुरुआत और समाजवादी राजनीति की वापसी की संभावना भी दिखने लगी है।

कुछ लोग यह हिसाब भी लगाने लगे हैं कि हिन्दी पट्टी में ही कितनी सीटें ऐसी हैं जो सिर्फ यादव, कुर्मी और मुसलमान वोट के गोलबंद होने से भाजपा के लिए मुश्किल पैदा करेंगी। कहना न होगा कि ऐसा हर हिसाब उत्साह बढ़ाने वाला ही है। खुद नीतीश के उत्तर प्रदेश के किसी कुर्मी बहुल सीट से चुनाव लड़ने की अटकलें लगाने लगी हैं, जो मोदी की तरह माहौल बदल सकता है।

अगर इस बार यह एकता बिहार-झारखंड से निकलकर उत्तर प्रदेश में भी दिखती है तो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और हरियाणा के जैसे इलाकों में भी इसी तरह का सामाजिक समीकरण बन सकता है जैसा यादव, कुर्मी और मुसलमान वाले करीब डेढ़ सौ संसदीय क्षेत्रों में संभव लगता है। नीतीश के आगे आने से ममता का समर्थन भी संभव है जो इस दौर में अलग राजनीति करती हैं

नीतीश कुमार के भाजपा के चंगुल से निकलने और उसके सारे छल-बल को ध्वस्त करने के बाद अचानक दिख रही विपक्षी सक्रियता और ऊर्जा के मामले में बड़े विपक्षी नेताओं में अभी अखिलेश यादव ही अपेक्षाकृत कम सक्रिय लगते हैं जबकि उनका बल और मन इस मामले में अगुवाई कर सकता है, सबसे बड़ी भूमिका निभा सकता है। बताना न होगा कि उत्तर प्रदेश न सिर्फ सबसे प्रभावी प्रदेश है बल्कि अखिलेश ने पिछला चुनाव हारकर भी यहां की तीन-चार कोण वाली राजनीति को सीधी टक्कर वाली राजनीति बनाने में सफलता पाई है।

अगर माहौल बनता है तो सपा के सांसदों की संख्या सिर्फ कांग्रेस से नीचे रह सकती है। तब केसीआर और ममता या अरविन्द केजरीवाल का दावा वैसे ही कमजोर होगा। अब अगर नीतीश कुमार और सारा विपक्ष अखिलेश को अपने प्रदेश में अगुवाई देता है और साथ मिलकर लड़ता है तो मोदी और योगी के लिए चुनाव जीतना आसान नहीं होगा। मुलायम सिंह और अखिलेश ने एक बार अकेले दम पर भाजपा को पटखनी दी भी है। अगर बिहार और उत्तर प्रदेश हाथ से निकले तो मुल्क की सत्ता बचाई नहीं जा सकती।

नीतीश कुमार के एक बड़े फैसले ने पहले ही बिहार और झारखंड की कुल 54 लोकसभा सीटों का माहौल बदला है। हमने देखा है कि बिहार में पिछली बार जब लालू और नीतीश साथ हुए थे तब किस तरह भाजपा का सफाया हो गया था। सामाजिक स्तर पर यह कोई यादव-कुर्मी और मुसलमान गठजोड़ ही नहीं रहता बल्कि सारे पिछड़े और दलित समाज की एकता बनती है जिसे प्रबुद्ध अगड़ों का भी समर्थन होता है।

अगर इस बार यह एकता बिहार-झारखंड से निकलकर उत्तर प्रदेश में भी दिखती है तो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और हरियाणा के जैसे इलाकों में भी इसी तरह का सामाजिक समीकरण बन सकता है जैसा यादव, कुर्मी और मुसलमान वाले करीब डेढ़ सौ संसदीय क्षेत्रों में संभव लगता है। नीतीश के आगे आने से ममता का समर्थन भी संभव है जो इस दौर में अलग राजनीति करती हैं-सिर्फ

सांप्रदायिकता के सवाल पर ही नहीं आर्थिक नीतियों और अपने आचरण में भी वे औरों से भिन्न हैं।

नीतीश के नाम पर नवीन पटनायक भी बदलते लग रहे हैं वरना उन्होंने अपने को सिर्फ ओडिसा तक सीमित कर लिया था। पहली बार उन्होंने पंचायत चुनाव में जाति के आधार पर टिकट बांटे थे और जबरदस्त जीत से वे इस मंत्र को दोहराने और सिर पर सवार भाजपा को पटखनी देने के मूड में हैं। एम के स्टालिन, चंद्रशेखर राव और जगनमोहन रेड्डी का रुख काफी कुछ मोदी विरोधी हो चुका है और स्थानीय राजनीति उनको भाजपा के साथ जाने न देगी।

स्वाभाविक तौर पर जैसे ही विपक्ष की एकता या एकजुटता का सवाल आता है उसके नेतृत्व का सवाल उठाकर भाजपा के रणनीतिकार बातों को उलझाने और विपक्ष में सिर फुटौवल कराना चाहते हैं। यह सवाल कम महत्व का है। लेकिन इस एकता का नीतिगत आधार क्या होगा यह सवाल महत्वपूर्ण है क्योंकि सिर्फ मोदी विरोध या कोई व्यक्ति विरोध विपक्षी एकता का आधार नहीं बन सकता।

इस मामले में पिछड़ा समाज और उसके अनुरूप आर्थिक-सामाजिक नीतियां आधार बनें तो ज्यादा बढ़िया बात होगी। नीतीश का कामकाज इस मामले में व्यावहारिक रहा है और भाजपा के साथ रहने के बावजूद उन्होंने कभी बुनियादी बातों पर समझौता नहीं किया। उनकी चर्चा के साथ पिछड़ा दलित और मुसलमान एकता की बात भी स्वाभाविक है, पर अखिलेश और उनके साथियों की बात खास तौर से उत्साहजनक है क्योंकि ये उस दौर के लोग हैं जब लोहिया-जेपी-नरेन्द्र देव तो नहीं ही थे बल्कि समाजवादी पार्टी और आन्दोलन भी बिखर गया था।

कई बार अपराधियों, जातिवादियों, मौकापरस्तों, पूंजीवादियों, मर्दवादियों और दलित विरोध की राजनीति को बर्दाश्त करते हुए भी उनके पिता मुलायम सिंह यादव काफी सारे पुराने समाजवादियों को साथ रखते हुए समाजवादी पार्टी चलाते रहे। यह पार्टी अब तीसेक साल पुरानी है जितनी कोई समाजवादी विचारधारा की पार्टी नहीं चली। अखिलेश ने भी अपराधियों, जातिवादियों वगैरह को किनारे करते हुए काफी समझदारी की राजनीति की और ढंग का शासन चलाया।

दूसरा समाजवादी ध्रुव बनाने की कोशिशें भी खूब चलीं। सच्चिदानन्द सिन्हा, अनुपम मिश्रा, मेधा पाटकर, हरभजन सिंह (रेलवे मेन्स यूनियन), नंजुदा स्वामी, पी. लंकेश,

जुगल किशोर रायवीर (उत्तर बंगाल तफसीली जाति ओ आदिवासी संगठन), राजकिशोर, जी.जी. पारिख, संजय मांगो जैसे समाजवादी अपने-अपने क्षेत्र में काम करते रहे। लम्बे समय से असली समाजवादी स्वर बरकरार रखते हुए किशन पटनायक जिस समाजवादी जन परिषद को एक विकल्प बनाने की राजनीति करते रहे उसका एक बड़ा हिस्सा अन्ना आंदोलन और आप में समाहित हुआ और अब स्वराज अभियान नाम से केजरीवाल की राजनीति का विकल्प बनाने में लगा हुआ है। उसके एक बड़े चेहरा योगेंद्र यादव अभी राहुल गांधी की एकता यात्रा के साथी बने हैं। समाजवादी विचारधारा को लेकर अपने-अपने स्तर पर संघर्ष कर रहे दलों और संगठनों की संख्या कम नहीं। गिनने बैठेंगे तो अभी और ऐसे लोग और जमात मिलेंगे जो अपने को समाजवादी धारा से, नरेन्द्र देव-लोहिया-जेपी की धारा से जुड़ा बताएंगे।

जिन लोगों को इन सभी धाराओं के मिलने और उससे अपार शक्ति पैदा होने को लेकर शक हो, उनको हाल का किसान आंदोलन याद कर लेना चाहिए जिसने नरेंद्र मोदी और अमित शाह के षड्यंत्रों के साथ ही उनके पीछे बैठे खेती के व्यवसायी गिरोह की ताकत को चूर-चूर कर दिया। भूमि अधिग्रहण कानून भी किसानों के प्रतिरोध के चलते गिरा। सीएए के खिलाफ चला आंदोलन भी जन बल के महत्व को बताता है।

फिर यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठेगा और उठना अच्छा भी लगेगा कि समाजवादियों की एकता क्यों नहीं हो सकती। अगर राजनीतिक रूप से दोनों सबसे प्रभावी राज्यों की राजनीति के सबसे बड़े खिलाड़ी समेत हजारों सही सोच-समझ वाले लोग पहल करें तो एक स्वस्थ समाजवादी विकल्प क्यों नहीं निकल सकता और आज जितनी ताकत तो सम्भवत: उस दौर में भी नहीं थी जब हमारे सारे समाजवादी नायक सक्रिय थे।

लिहाजा पहला सवाल यही होगा कि अखिलेश को या उनके पिता मुलायम सिंह को, नीतीश कुमार को या लालू प्रसाद को यह पहल करने की और अपना प्रमुख लक्ष्य बनाने की सुध कब आती है।

बाकी लोग इस मुहिम में मददगार बन सकते हैं पर पहल तो नीतीश और अखिलेश जैसों

पहल तो नीतीश और अखिलेश जैसों को ही करनी होगी। एक दिशा गैर-भाजपा, गैर-कांग्रेसी विकल्प बनाने वाली भी होगी और उसकी उपयोगिता भी बची हुई है। ओम प्रकाश चौटाला की पार्टी, चंद्रबाबू की पार्टी, नवीन पटनायक की पार्टी, ममता की पार्टी, शरद पवार की पार्टी से ताकत तो मिल सकती है लेकिन उससे वैकल्पिक और समाजवादी राजनीति की संभावनाएं धूमिल ही होती जाएंगी

को ही करनी होगी। एक दिशा गैर-भाजपा, गैर-कांग्रेसी विकल्प बनाने वाली भी होगी और उसकी उपयोगिता भी बची हुई है, पर इस लेखक जैसे काफी सारे लोगों की उसमें कम दिलचस्पी होगी। ओम प्रकाश चौटाला की पार्टी, चंद्रबाबू की पार्टी, नवीन पटनायक की पार्टी, ममता की पार्टी, शरद पवार की पार्टी से ताकत तो मिल सकती है लेकिन उससे वैकल्पिक और समाजवादी राजनीति की संभावनाएं धूमिल ही होती जाएंगी।

इस बात की प्रबल संभावना है कि अगर नीतीश और अखिलेश जैसे लोग कांग्रेस के इर्द-गिर्द अपने वर्तमान और भविष्य को सुधारने की अल्प दृष्टि से राजनीति करेंगे तो उनका निजी लाभ हो सकता है, पर एक स्वस्थ राजनीति का, एक वैकल्पिक समाजवादी राजनीति का, समाज की बुनियादी जरूरत के अनुरूप चलने वाली राजनीति का जोर नहीं बन सकता। जाहिर है कि नीतीश हों या अखिलेश या फिर कोई और, अगर उसे एक समाजवादी दल और विकल्प तैयार करने की पहल करनी है तो नोटबंदी जैसी घोर बेवकूफी के फैसले से लेकर हर बड़े मुद्दे पर एक संतुलित और पुरानी समाजवादी धारा से निर्देशित लाइन लेनी होगी।

औरत, दलित, आदिवासी, पिछड़े जमात के प्रति किसी किस्म का प्रतिगामी फैसला न लेना होगा न ऐसे किसी फैसले का साथ देना होगा। हमारी उस पीढ़ी के सारे पिछड़ों की राजनीति करने वाले नेता इस तरह के पिछड़ावादी बन गए कि महिला सशक्तिकरण के कई मामलों के विरोध में सबसे आगे रहे। नया नजरिया बनाने और फैसले करने के सही-संतुलित आधार विकसित में समाजवादी विचारधारा आज भी सबसे उपयोगी और अच्छी है, इसलिये उसकी पैरवी सबसे जरूरी है। भारतीय समाज में पैसा, जाति, अंग्रेजी भाषा, पुरुष होना, शहरी होना ही विभेदकारी चीजें हैं।

डा. लोहिया सात क्रांतियों के नाम से जिस वैश्विक भेदभाव को समाप्त करने का सूत्र देते हैं उसे बीज मंत्र की तरह याद रखने की जरूरत है। जाति, आर्थिक गैर-बराबरी, भाषा, क्षेत्र, लिंग, चमड़ी के रंग और गांव-शहर का भेद खत्म करना ही वास्तविक समाजवाद है, पर इसमें हर कारक का असर अलग-अलग होता है। यह भी ध्यान रखना होगा कि इन चीजों में से एक या दो भी किसी के पास हों तो वह अनिवार्यतः: शोषकों या अन्याय करने वालों या व्यवस्था से लाभ लेने वालों की श्रेणी में ही हो जाए यह नहीं मानना चाहिए, बल्कि जिस तरह डॉ. लोहिया ने अगड़ों को खाद बनाकर पिछड़ों-अर्थात दलित, आदिवासी, ओबीसी और महिलाओं को आगे बढ़ाने का फार्मूला दिया उसका दायरा बढ़ाना होगा। हमारे स्थापित और प्रिय मूल्यों को लेकर समाज में जितने भी आंदोलन चल रहे हैं, उन सभी को समेटने की कोशिश करनी होगी।

जब समाजवादी विकल्प बनाने की मुहिम कुछ गति पकड़ेगी तो स्वाभाविक रूप से ऐसे आंदोलनों का रुझान उसकी तरफ होगा। अगर उसे साथ लिया जाए तो मुद्दे और नई जमीन मिलने के साथ ही ईमानदार, तपे-तपाए और कर्मठ कार्यकर्ताओं की बड़ी जमात मिलेगी। याद रखना होगा कि जितने आन्दोलन पुराने समाजवादी दौर में चलते थे आज उनका दायरा बहुत बढ़ चुका है। इसमें दलित, आदिवासी, महिला और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर काफी सक्रियता है। अगर कोई पार्टी इनको समेट ले तो न सिर्फ उसका अपना चरित्र व्यापक होगा बल्कि उसकी ताकत बहुत बढ़ जाएगी और राजनीतिक उपयोगिता के तो क्या ही कहने!

डॉ. लोहिया की साहित्यकारों, कलाकारों और पत्रकारों से दोस्ती अनजान नहीं है और वे उनको बौद्धिक खुराक से ज्यादा क्या देते होंगे. समाजवादी विकल्प बनाने की दिलेरी दिखाने वाला नया नेता अगर इस जमात से सम्पर्क रखता है, उसकी बातों का सम्मान करता है, अपने काम और फैसलों से उनको बौद्धिक खुराक देता है तो इस पक्ष से भी उसकी मुहिम को मदद मिलने में कोई कमी नहीं रहेगी क्योंकि यही जमात घटिया राजनीति, घटिया नेताओं से सबसे ज्यादा त्रस्त है और इसके पास ही सबसे अच्छे सपने हैं।

जब समाजवादी विकल्प बनाने की मुहिम कुछ गति पकड़ेगी तो स्वाभाविक रूप से ऐसे आंदोलनों का रुझान उसकी तरफ होगा। अगर उसे साथ लिया जाए तो मुद्दे और नई जमीन मिलने के साथ ही ईमानदार, तपे-तपाए और कर्मठ कार्यकर्ताओं की बड़ी जमात मिलेगी। याद रखना होगा कि जितने आन्दोलन पुराने समाजवादी दौर में चलते थे आज उनका दायरा बहुत बढ़ चुका है

यह सब गिनवाने और सारी सम्भावना बताने के बाद भी कोई यह सवाल उठा सकता है कि आखिर इसका आधार क्या है। जाहिर है सबसे बड़ा आधार तो ऐसी राजनीति की जरूरत महसूस करना ही है जिसे नरेन्द्र देव, लोहिया और जेपी चलाते रहे। इसका दूसरा आधार कर्पूरी ठाकुर, देवराज अर्स, मुलायम सिंह, लालू यादव और अब इन सबसे भी आगे बढ़कर नीतीश कुमार और अखिलेश यादव द्वारा अपेक्षाकृत बेहतर शासन देना और बड़ी सत्ता को सम्भाल लेना है। अभी तक यह माना जाता था कि समाजवादी राज करना जानते ही नहीं, पार्टी चला ही नहीं सकते, सिर्फ अगड़ा-पिछड़ा का विभाजन कराके वोट पाते हैं लेकिन ये मिथक टूटे हैं। सारे दबाव, नौकरशाही, पैसे वाली जमात और मीडिया के असहयोग के बावजूद उनका शासन का, अच्छे फैसलों का रिकार्ड बेहतर रहा है। आपसी खींचतान के बावजूद आज पहले जैसी टूट और बिखराव नहीं दिखता। हां, आदर्शवाद और व्यावहारिकता के बीच एक खाई दिखती है, आन्दोलनों और सरकारों में समन्वय या मेल नहीं दिखती। पर यही तो चुनौतियां हैं और नीतीश या अखिलेश अगर नरेन्द्र मोदी-अमित शाह जैसों से लड़ने और लड़कर परास्त करने में सक्षम हैं, तो उनसे इस तरह की एकता करा लेने और एक स्वस्थ विकल्प बनाने की मुहिम चलाने की उम्मीद करना कुछ ज्यादा नहीं है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

यूपी-बिहार देंगे मोदी को पछाड़

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

आगे बढ़ते कदमों से जिनके हतप्रभ है देश।
नेता हैं वे यूपी से, नाम है अखिलेश॥

जितना सशक्त और दमदार-धारदार विपक्ष उत्तर प्रदेश में भाजपा को चुनौती दे रहा है उतनी चुनौती बिहार के अलावा देश के किसी हिस्से में भाजपा को नहीं मिली। बिहार में नीतीश कुमार ने भाजपा को सत्ता से पैदल कर दिखाया है तो यूपी में अब अखिलेश यादव और उनकी समाजवादी पार्टी से देश की उम्मीदें बढ़ गयी हैं।

सिर्फ बिहार और यूपी से एनडीए को लोकसभा के पिछले चुनाव में 120 सीटों में से 101 सीटें मिली थीं। देश भर में एनडीए ने कुल 333 और भाजपा ने 303 सीटें जीती थीं। ये आंकड़े इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि

बिहार में महागठबंधन बन जाने के बाद बगैर किसी मजबूत सहयोगी के भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के लिए एक-एक सीट निकालना भी मुश्किल पड़ सकता है।

यूपी में ध्रुव बन चुके हैं अखिलेश

अगर यूपी में भी अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी के आगे बढ़ने का सिलसिला जारी रहा, तो एनडीए को यहां भी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। हालांकि यूपी में विपक्ष की ओर से गठबंधन की स्थिति अभी स्पष्ट नहीं हुई है, फिर भी माना जा रहा है कि कड़ी टक्कर होने वाली है। अगर एनडीए बिहार-यूपी की 120 सीटों में आधी यानी 60 पर सिमट गयी, तो भाजपा या एनडीए को सरकार बनाने के लिए जरूरी जादुई आंकड़े यानी 272 के लिए तरसना पड़ जा सकता है।

घटती गयी है भाजपा की ताकत

यह समझना जरूरी है कि जिस उत्तर प्रदेश में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए को बीते दो लोकसभा चुनावों में 80 में से 72 और 62 सीटें मिली हैं वहां भाजपा या एनडीए की सीटें क्यों घटेंगी और समाजवादी पार्टी की सीटें क्यों बढ़ेंगी? यूपी में लगातार चुनाव जीत रही भाजपा का जनाधार लगातार कम होता जा रहा है। वहीं, मुकाबले में समाजवादी पार्टी तेजी से मजबूत होती दिख रही है। यह सच है कि भाजपा को विधानसभा चुनाव में 2017 में 39.7 प्रतिशत वोटों के मुकाबले 2022 में 41.3 प्रतिशत वोट मिले। यानी 1.6 प्रतिशत वोट बढ़ गये। मगर, इससे बड़ा सच यह है कि समाजवादी पार्टी अपने जीवनकाल में सर्वाधिक वोटों की हिस्सेदारी के स्तर पर खड़ी है। 2017 में जहां 30 प्रतिशत वोट पाकर अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बने थे, वहीं 2022 में 32 प्रतिशत वोट पाकर भी वे सत्ता से दूर रहे। समाजवादी गठबंधन को 2022 में 37.3 फीसदी वोट मिले।

जनता से जुड़कर जनता के बीच रहकर सियासत को मजबूत भी किया जा सकता है और प्रतिस्पर्धी सियासत को कमजोर भी। अखिलेश यादव यह करने की कोशिश करते दिख रहे हैं। हर मोर्चे पर भाजपा सरकार की ईंट से ईंट बजाते नज़र आ रहे हैं अखिलेश यादव और उनकी समाजवादी पार्टी

भाजपा विरोधी वोटों का आकर्षण केंद्र है सपा

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास में पहली बार भाजपा को विधानसभा चुनाव में 40 फीसदी से ज्यादा वोट मिले। वहीं, 37.3 फीसदी वोट पाकर भी सपा गठबंधन सत्ता में नहीं आ सकी। इन दोनों ही चमत्कारिक नतीजों के पीछे भाजपा की भाजपा के सामने बिछ जाने वाली सियासत वजह रही। 2007 के विधानसभा चुनाव में 30 फीसदी वोट हासिल करने वाली बसपा को 2017 में 22 फीसदी वोट मिले थे जो 2022 में महज 11.9 फीसदी पर आकर टिक गये। 12.1 फीसदी वोट गंवाकर बसपा ने भाजपा को सत्ता को बरकरार रखने में अहम भूमिका निभाई। बसपा के वोटों में गिरावट और भाजपा एवं सपा के गठबंधनों के बीच वोटों के अंतर को देखें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है।

बसपा का खुलकर भाजपा के सामने आत्मसमर्पण सामने आ जाने के बाद जनता का मिजाज बदला है। बसपा के पास बचे हुए 11.9 फीसदी वोट वो वोट हैं जो भाजपा की ओर नहीं जाने वाले हैं। मगर, ये वही वोटर हैं जिनकी आंखों पर छाया पर्दा हट चुका है। ये वोटर अब समाजवादी पार्टी की ओर रुख करेंगे। इसका मतलब यह है कि यूपी की सियासत अब दो ध्रुवों वाली सियासत में तब्दील होती दिख रही है।

बीएसपी के वोटर क्या करें, सपा ही उम्मीद

जनता से जुड़कर जनता के बीच रहकर सियासत को मजबूत भी किया जा सकता है और प्रतिस्पर्धी सियासत को कमजोर भी। अखिलेश यादव यह करने की कोशिश करते दिख रहे हैं। हर मोर्चे पर भाजपा सरकार की ईंट से ईंट बजाते नज़र आ रहे हैं अखिलेश यादव और उनकी समाजवादी पार्टी। विधानसभा चुनाव 2022 की बात करें तो भाजपा और समाजवादी गठबंधन के बीच महज 6.9 फीसदी के फासले को 3.5 फीसदी वोट से पाटा जा सकता है। चूंकि लोकसभा चुनाव में 50 फीसदी से अधिक वोट पाकर भी एनडीए विधानसभा में 44.2 फीसदी वोटों से ज्यादा हासिल नहीं कर सका तो इसका मतलब यह है कि उसके जनाधार में लगातार गिरावट का दौर जारी है।

यूपी में भाजपा विरोधी वोटों के ध्रुवीकरण का सबसे बड़ा आकर्षण अखिलेश यादव बन चुके हैं। ऐसे में जो वोट बसपा के साथ रह गये थे और जिन्हें अब बसपा की सियासत पर भरोसा भी नहीं रहा, ऐसे वोट सीधे समाजवादी पार्टी से आ जुड़ेंगे- यह तय

लगता है। यह वोट बैंक 11.9 फीसदी है। अगर इसका आधा भी समाजवादी पार्टी अपने साथ जोड़ पाती है तो अखिलेश के नेतृत्व वाले समाजवादी पार्टी गठबंधन का वोट शेयर 37.3 फीसदी से बढ़कर 43.2 हो जाता है। इस तरह भाजपा को 2017 विधानसभा चुनाव में मिले वोट शेयर 44.2 फीसदी के एकदम करीब यह जा पहुंचता है। आगे मामूली आधे प्रतिशत वोट भी अगर भाजपा से घट जाते हैं तो समाजवादी पार्टी को स्पष्ट तौर पर बढ़त मिल जाती है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि सत्ता के खिलाफ लोगों की भावना का फायदा उस दल को ही मिलता है जो विपक्ष की आवाज़ को मजबूत कर रहा होता है।

नजदीकी लड़ाई वाली सीटें ही करेंगी आर-पार

यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा की सदन में ताकत 77.4 फीसदी से घटकर 63.3 फीसदी तक आ पहुंची है। वहीं समाजवादी पार्टी की सदन में ताकत 11.7 फीसदी से बढ़कर 27.5 फीसदी हो गयी है। एक और गौर करने वाली बात यह है कि विधानसभा चुनाव में 131 सीटों पर नजदीकी लड़ाई हुई थी यानी जीत-हार का अंतर 5-10 फीसदी से कम का रहा था। ऐसी सीटों में भाजपा ने सबसे ज्यादा 74 सीटें जीती थीं और समाजवादी पार्टी ने 55 सीटों पर कब्जा जमाया था। ये सीटें अखिलेश के थोड़ा और जोर लगा देने पर भाजपा की मुश्किलें बढ़ा देने वाली हैं। लोकसभा चुनाव के नजरिए से नजदीकी मुकाबले वाली सीटों का बड़ा महत्व है।

विधानसभा चुनाव के दौरान भी यह बात नोटिस की गयी थी कि अखिलेश यादव की सभाओं में भारी भीड़ जुट रही है। इसके बावजूद कम वोटों के अंतर से हार-जीत का फैसला होने की स्थिति उल्टी पड़ गयी। एक बार फिर अखिलेश के आह्वान पर हर कार्यक्रम में युवाओं की शिरकत होती दिख रही है। यही बात भाजपा को बेचैन कर रही है और अखिलेश का उत्साह बढ़ा रही है।

अखिलेश यादव ने हर जाति-धर्म को साथ लेकर चलने की नीति अपनाई है। वे राजनीतिक मुद्दों पर भाजपा पर हमला करने से पीछे नहीं हट रहे हैं। इसका राजनीतिक फायदा उन्हें होता दिखने लगा है। यूपी विधानसभा सत्र के पहले दिन जब अखिलेश यादव ने अपने विधायकों के साथ पैदल राजभवन तक चलने का संकल्प लिया तो उन्हें पुलिस ने जबरन रोक दिया। इसके बावजूद इस कार्यक्रम में उमड़ी भीड़ ने भाजपा की नींद उड़ा दी है।

अखिलेश के दौरे से पश्चिम के समाजवादी उत्साहित

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के पश्चिम उत्तर प्रदेश के दौरे ने इलाकाई समाजवादियों को उत्साह से भर दिया। श्री यादव के इस दौरे ने नोएडा से लेकर मथुरा-वृंदावन तक समाजवादियों का भरपूर रंग जमाया।

श्री अखिलेश यादव ने दिनांक 27 अगस्त 2022 को नोएडा के गढ़ी चौखंडी में युवा नेता भरत यादव द्वारा आयोजित कार्यक्रम में समाजवादी नेता चौधरी रघुवीर सिंह प्रधान जी की प्रतिमा का अनावरण किया। नोएडा पहुंचने पर उत्साही कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया।

श्री यादव के स्वागत में हजारों की संख्या में बुजुर्ग, महिलाएं और नौजवान मौजूद थे। हर तरफ अपने प्रिय नेता श्री अखिलेश यादव को देखने और सुनने को सभी आतुर दिखे।

इस अवसर पर आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने चौधरी रघुवीर सिंह प्रधान को याद करते हुए कहा कि प्रधान जी ने हमेशा समाजवादी पार्टी की मदद की और पार्टी को मजबूत करने का काम किया। श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी समाज के सभी वर्गों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है और हमेशा करती रहेगी।

अपने संबोधन में सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा सरकार में बहुत भ्रष्टाचार हो रहा है। ट्रांसफर पोस्टिंग में भाजपा सरकार में ऐसा खेल हुआ है जो कभी नहीं हुआ। मुख्यमंत्री जी को पता ही नहीं कि कौन मंत्री बन गया और मंत्रियों ने किसके ट्रांसफर कर दिये ये किसी को नहीं पता। भाजपा सरकार में लोग अभी से शर्मिंदा हो रहे हैं।

श्री यादव ने कहा नौजवानों को न रोजगार मिल रहा है और न काम। कारोबार भी नहीं चल रहा है। जब से नोटबंदी हुई है तब से देश का कारोबार ठप हो गया है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार की यह स्थिति है कि पांच साल

सरकार चलाने के बाद अस्पतालों की स्थिति देखकर मंत्री शर्मिंदा हैं। सरकारी अस्पतालों में इलाज नहीं मिल रहा है, दवा नहीं है। ऑपरेशन के लिए समय कब मिलेगा कोई पता नहीं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार ने विकास के बहुत कार्य किए थे। भाजपा सरकार ने कोई काम नहीं किया सिर्फ समाजवादी सरकार में हुए कार्यों का उद्घाटन किया। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा राज में महंगाई, भ्रष्टाचार, चोरी लूट, हत्या और महिला अपराध चरम पर है।

मथुरा-वृंदावन दौरा

श्री अखिलेश यादव नोएडा के दौरे के बाद 28 अगस्त 2022 को मथुरा-वृंदावन पहुंचे. जहां पर उन्होंने सर्वप्रथम द ब्रज फाउंडेशन के अध्यक्ष विनीत नारायण से मुलाकात की और पार्टी कार्यकर्ताओं से करीब 1 घंटे तक मुलाकात भी की।

सपा कार्यकर्ताओं से मुलाकात के बाद श्री अखिलेश यादव जयपुर मंदिर के ठाकुर राधा माधव और दक्षिण भारतीय पद्धति के रंगनाथ मंदिर में दर्शन करने पहुंचे। जिसके बाद अखिलेश यादव कार्यकर्ताओं के साथ बाहर निकले और चाट भंडार पर चाट का स्वाद चखा। श्री अखिलेश यादव ने कार्यकर्ताओं के साथ बांके बिहारी मंदिर में भी दर्शन किए और मंदिर के स्वामियों से प्रसाद ग्रहण किया।

पत्रकारों के सवालों के जवाब में उन्होंने बांके बिहारी मंदिर में हुए हादसे के लिए प्रदेश सरकार को जिम्मेदार ठहराया। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सपा सरकार में भी जन्माष्टमी का कार्यक्रम हुआ था, लेकिन तब ऐसे हादसे नहीं हुए थे। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में यह हादसा हुआ है और इसके लिए सरकार जिम्मेदार है। सरकार को मृतकों को कम से कम 50 लाख की आर्थिक मदद देनी चाहिए।

कन्नौज-औरैया दौरा

श्री अखिलेश यादव 29 अगस्त 2022 को सैफई से चलकर जब ऐरवा कटरा औरैया पहुंचे वहां कार्यकर्ताओं ने फूलों की वर्षा करके स्वागत किया। यहां से काफिला विधूना औरैया के लिए रवाना हुआ। रास्ते में कई जगह बूढ़े, बच्चे, नौजवान, महिलाओं ने

उनका स्वागत किया।

विधूना में उन्होंने पूर्व राज्यमंत्री श्री सचिन गुप्ता के छोटे भाई व्यापारी श्री नितिन गुप्ता के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की। श्री यादव ग्राम पंचायत ताजपुर प्रधान नीलम कठेरिया के घर पहुंचे जहां उनके पति श्री अशोक कठेरिया के निधन पर भी शोक संवेदना व्यक्त की। देवेश शाक्य के किशनी रोड स्थित कार्यालय पर पहुंचकर मौजूद पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात की।

औरैया में उन्होंने कहा कि भाजपा मनमानी करने से बाज नहीं आ रही है। जनता इन्हें अगले लोकसभा चुनाव में सबक सिखाएगी क्योंकि भाजपा बेरोजगारी, महंगाई, डीजल-पेट्रोल, रसोईगैस की बढ़ी कीमतों की बात नहीं कर रही है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में 'अमृत सरोवर योजना' में तालाब खुदाई के नाम पर जमकर भ्रष्टाचार हुआ है। भाजपा विकास नहीं विनाश करती है। तमाम हेरिटेज स्थानों को बर्बाद कर दिया है। भाजपा पूरी तरह भ्रष्टाचार में डूबी है। हर विभाग में भ्रष्टाचार और लूट हो रही है। एम्बुलेंस सेवा चौपट हो गई है।

औरैया से लखनऊ जाते श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज के उमर्दा स्थित काऊ मिल्क प्लांट और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर वेजिटेबल का दौरा किया। दोनों प्रोजेक्टों का दौरा कर अखिलेश यादव तिर्वा कस्बा पहुंचे।

वहां उन्होंने एक दुकान पर चाय पीते समय पत्रकारों से बातचीत की। पूर्व सीएम ने प्रदेश सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि किसानों की अच्छी आमदनी हो, इसके लिए उन्होंने अपनी सरकार में दोनों प्रोजेक्ट शुरू किए थे। मौजूदा सरकार के रवैये से दोनों प्रोजेक्ट बदहाल है। उनके नाम के पट उखाड़ कर भाजपा नेताओं ने अपने नाम की लगा दी है। इत्र पार्क पर उन्होंने कहा कि गोबर सरकार में इत्र पार्क नहीं शुरू हो सकता है।

समाजवादियों से ही सबको उम्मीद

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि बिना किसान-मजदूर का हित किए कोई विकास नहीं हो सकता है। आज महंगाई की मार सबसे ज्यादा श्रमिकों और समाज के कमजोर वर्ग पर पड़ रही है। भाजपा की प्राथमिकता में पूंजीपतियों का हित साधन है। श्रमिकों के लिए अहितकारी कानून बनाए जा रहे हैं। उनके हक और सम्मान का संघर्ष जारी रखना है।

श्री अखिलेश यादव दिनांक 4 सितंबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में लगभग 47 श्रमिक संगठनों, समाज सेवियों, वित्तविहीन माध्यमिक शिक्षकों, घुमंतू तथा लघु एवं मध्यम उद्यमों के श्रमिक प्रतिनिधियों की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सत्ताधारी दल द्वारा प्रलोभन एवं सत्ता का बढ़ता दुरूपयोग लोकतंत्र के लिए बड़ी चुनौती है। भाजपा के षड़यंत्र अब उजागर होते जा रहे हैं। इससे उम्मीद बंधी है कि 2024 में देश में लोकतंत्र

की बहाली होगी।
श्री अखिलेश यादव ने विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का साथ देने के लिए श्रमिक भाइयों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी श्रमिकों के साथ है। समाजवादी सरकार में मजदूरों के पक्ष में कई निर्णय लिए गए थे और योजनाएं लागू की गई थी। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान श्रमिकों को अनाथ छोड़ दिया गया। भाजपा सरकार ने उनकी कोई मदद नहीं की। पैदल चलते 90 मजदूरों की मौत हुई जो श्रमिक अपने गांव जा रहे थे। श्रमिकों को समाजवादी पार्टी ने मदद दी और प्रत्येक मृतक आश्रित को एक लाख रुपए की आर्थिक सहायता की थी।
श्री यादव ने कहा कि भाजपा का चरित्र अमानवीय है। समाज के कामगार, कमजोर वर्ग और अल्पसंख्यकों के प्रति भाजपा का रवैया संवेदनशून्य है। आज भाजपा अपने कुप्रचार से लोगों को भ्रमित करना अपनी उपलब्धि मानती है। भाजपा की कुनीतियों के खिलाफ समाजवादी पार्टी ही संघर्ष कर रही है। समाजवादी पार्टी समाजवाद, लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है।
इस अवसर पर दर्जनों श्रमिक संगठनों के पदाधिकारियों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ली और डबल इंजन भाजपा सरकार में श्रमिकों के लगातार शोषण के विरूद्ध संघर्ष का संकल्प जताया। प्रारम्भ में सभी ने भारतीय संविधान की शपथ ली। सभी की राय थी कि श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में ही उत्तर प्रदेश का विकास हो सकता है और न्याय तथा नागरिकों को

सुरक्षा मिल सकेगी। उनका कहना था कि श्री अखिलेश यादव ही आज हम सबकी उम्मीद है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुवचन राम, सेवानिवृत्त आईआरएस ने तथा संयोजन श्री राजनाथ यादव और श्री शशांक यादव पूर्व एमएलसी ने किया। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्र वर्मा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

उधर 11 सितंबर को श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में किसान एवं सिख समाज के प्रतिनिधिमंडल से भेंट के उपरांत उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा कुप्रचार करती रहती है।

श्री यादव ने कहा कि 2022 के विधानसभा चुनाव में धांधली की गई। हजारों समाजवादी पार्टी समर्थकों के वोट नहीं पड़ने पाए। प्रशासन का पूरा दुरूपयोग हुआ। आज उत्तर प्रदेश विकास कार्यों में पूरी तरह से पिछड़ गया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा संविधान का ईमानदारी से पालन नहीं कर रही है। संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया जा रहा है। गांवों में कोई विकास कार्य नहीं हुआ है। विद्युत आपूर्ति में कटौती की जा रही है। भाजपा को अंधेरा पसंद है। इसलिए प्रदेश को विनाश की ओर ले जा रही है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान की घोर उपेक्षा है। महंगाई के कारण किसानों के सामने अर्थ संकट है। भाजपा की आर्थिक नीतियों के चलते ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गई है। गरीब की कमर टूट गई है। महिलाएं अपमानित हो रही है। नौजवान बेकारी से परेशान है। नौजवानों का भविष्य अंधकार में है।

इस अवसर पर सपा प्रमुख से भेंट करने वाले सिख प्रतिनिधियों में सर्वश्री संत बाबा जग्गा सिंह, कुलदीप सिंह भुल्लर, त्रिलोक सिंह लिलौटी, निर्मल जीत सिंह रंधावा, कपिल गुज्जर, अमर सिंह, शार्दुल सिंह, जगदीश सिंह, नरेन्द्र सिंह, विक्रम सिंह एवं गुरमेज सिंह सहित दर्जनों सिख किसान शामिल रहे।

सपा में शामिल हुए कई नेता

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के 2022 में गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़) विधानसभा प्रत्याशी श्री रवीन्द्र चौधरी के नेतृत्व में श्री सोना सिंह चेयरमैन नगरपालिका परिषद गढ़मुक्तेश्वर जनपद हापुड़ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से भेंट कर उनके नेतृत्व में आस्था जताते हुए 12 सितंबर को समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए।

बहुजन समाज पार्टी छोड़कर समाजवादी पार्टी में शामिल होने वालों में सर्वश्री उस्मान चौधरी, वर्तमान बसपा सभासद, खजान सिंह अध्यक्ष मूढ़ा उद्योग, शेर सिंह कर्दम प्रबंधक डॉ अम्बेडकर उत्थान समिति, अशोक कुमार (फौजी) जिला सचिव किसान मोर्चा भारतीय किसान यूनियन, अरविन्द कुमार एडवोकेट बसपा नगर कार्यकारिणी सदस्य, बादल सिंह आजाद युवा मोर्चा बसपा कार्यकारिणी सदस्य, शहजाद चौधरी सदस्य युवजन बसपा तथा श्रीमती सरिता पत्नी श्री योगेन्द्र पूर्व सभासद बसपा प्रमुख रहे।

समाजवादी पार्टी में शामिल नेताओं ने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में सन् 2024 में समाजवादी पार्टी को भारी बहुमत से जीत दिलाने का भरोसा दिलाया है।

वंचितों को हक दिलाने की लड़ाई जीतेंगे

-अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भारत जैसा सामाजिक भेदभाव दुनिया में कहीं नहीं है। यहां धर्म बदल जाता है, जाति नहीं। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर और डॉ राम मनोहर लोहिया जैसे विचारकों ने जाति तोड़ो अभियान चलाया पर जाति नहीं टूटी। पिछड़ों, दलितों, वंचितों को उनका हक और सम्मान दिलाने की यह लड़ाई लम्बी और कठिन जरूर है, पर उम्मीद है कि हम यह लड़ाई जीतेंगे।

श्री अखिलेश यादव 30 अगस्त 2022 को समाजवादी पार्टी प्रदेश मुख्यालय में श्री कमल किशोर कठेरिया द्वारा लिखित 'भागीदारी का संघर्ष' पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी,

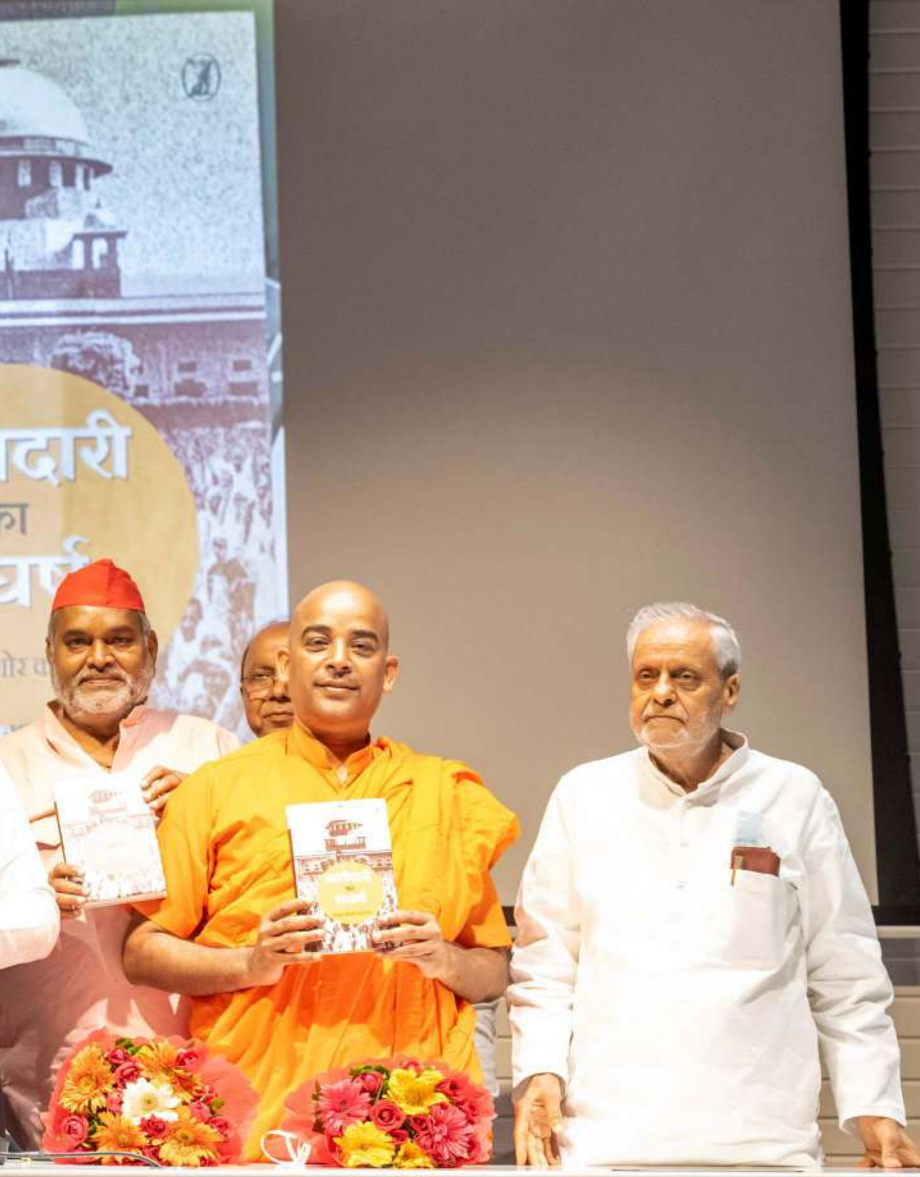

विधायक श्री बृजेश कठेरिया, रमेश चंचल, ए.एच. हाशमी तथा भंते महेन्द्र जी व अन्य समाजवादी नेता उपस्थित थे।

श्री यादव ने कहा कि हमें साथ मिलकर सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़नी होगी क्योंकि हमारी लड़ाई जिनसे है वे बहुत ताकतवर हैं और हर जगह हर संस्थान में उनका कब्जा है। समाजवादी पार्टी ने अपने चुनाव घोषणापत्र में सरकार बनने पर तीन महीने के अन्दर जातीय जनगणना कराने का वादा किया था।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जातीय भेदभाव सामाजिक जन जागरूकता से मिट सकता है। इसके लिए समाज को जागरूक करना होगा। वस्तुस्थिति की सही जानकारी लोगों तक पहुंचनी चाहिए। सत्ता दल तो सच को झूठ बनाने में माहिर है। श्री अखिलेश यादव ने 'भागीदारी का संघर्ष' पुस्तक के लेखक श्री कमल किशोर कठेरिया को बधाई दी।

श्री कमल किशोर कठेरिया (पूर्व राजस्व सेवा अधिकारी) ने कहा देश में 4 हजार वर्षों से दो विचारधाराएं चल रही हैं। एक नफरत की और दूसरी सद्भाव की। उन्होंने कहा बहुसंख्यक विभाजित है। आरक्षण को लेकर सबसे ज्यादा भ्रम और विवाद है। पुस्तक का उद्देश्य सही जानकारी देना है ताकि आरक्षण पर सार्थक बहस हो सके। उन्होंने कहा कि श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व को मजबूत करेंगे तभी संविधान बचेगा। श्री अखिलेश जी का नेतृत्व ही उत्तर प्रदेश में विकल्प है।

'साइमन गो बैंक' के मंत्र दाता

यूसुफ मेहर अली

मधुकर त्रिवेदी

यह सभी जानते हैं कि 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे' के मंत्रदाता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक थे। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का उद्घोष गांधी जी का था, 'दिल्ली चलो' का आह्वान नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने किया था। किन्तु बहुत कम लोगों को पता होगा कि 'साइमन गो बैक' का नारा मुम्बई के एक नौजवान समाजवादी यूसुफ मेहर अली ने लगाया था जिसकी गूंज पूरे देश में सुनाई दी थी।

यूसुफ मेहर अली का जन्म बंबई के एक सम्पन्न मुस्लिम बोहरा परिवार में 2 3 सितम्बर 1903 को हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा बोरीबंदर के न्यू हाईस्कूल में हुई थी। बाद में सैंट जेवियर कालेज और एलिफंस्टन कालेज में पढ़ाई के दौरान अपने छात्र जीवन से ही यूसुफ राजनीतिक गतिविधियों में दिलचस्पी लेने लगे थे।

अंग्रेजों ने भारत को किस सीमा तक उत्तरदायी शासन दिया जा सकता है पर रिपोर्ट देने के लिए 8 नवम्बर 1927 को सात सदस्यीय आयोग सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में बनाया। इसके सभी सदस्य अंग्रेज थे। दिसम्बर 1927 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया। 3 फरवरी 1928 का रात में बंबई के मोल बंदरगाह पर पानी के जहाज से साइमन कमीशन के सदस्य उतरे। तभी नौजवान नेता यूसुफ मेहर अली ने नारा लगाया 'साइमन गो बैक' और हजारों कंठों से उसकी गूंज से वातावरण में उत्तेजना फैल गई।

इन प्रदर्शनकारियों पर लाठियां बरसी। यूसुफ मेहर अली ने यूथ लीग के सदस्यों के साथ पूरे बंबई में साइमन कमीशन के खिलाफ पोस्टर चिपकाए। जगह-जगह 'साइमन गो बैक' का नारा गूंजने लगा।

यूसुफ मेहर अली हर संघर्ष के अगुआ बन गये। गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए इन्होंने मुंबई में एक स्वदेशी बाजार लगाया। मेरठ कांड के क्रांतिकारियों के लिए चंदा जुटाया। क्रांतिकारी जतिनदास की लाहौर जेल में 60 दिन के अनशन के बाद मौत पर यूथ लीग ने एक विशाल जुलूस निकालकर अंग्रेजी साम्राज्य विरोधी नारे लगाये। पुलिस ने लाठियां चलाई पर यूसुफ डिगे नहीं। मुम्बई में बड़ाला नमक सत्याग्रह में हजारों की भीड़ पर पुलिस ने घोड़े दौड़ाये। यूसुफ ने एक घोड़े की लगाम पकड़ ली। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

यह तो ऐतिहासिक तथ्य है कि गांधी जी के 'भारत छोड़ो' आंदोलन को सफल बनाने में सर्वाधिक योगदान समाजवादी नेताओं का ही रहा। जयप्रकाश नारायण और डा लोहिया के अलावा अरूणा आसिफ अली, ऊषा मेहता आदि ने अगस्त क्रांति की आग ऐसी भड़काई कि ब्रिटिश साम्राज्य को अंततः भारत छोड़ना ही पड़ गया।

समाजवादियों ने धूमधाम से मनाई विश्वकर्मा जयंती

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 17 सितंबर 2022 को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ सहित प्रदेश के सभी जनपदों के पार्टी कार्यालयों में भगवान विश्वकर्मा की जयंती सादगी से मनाई गई। सभी स्थानों पर विश्वकर्मा जी की पूजा के विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान विश्वकर्मा जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की मांग की गई।

राजधानी लखनऊ में समाजवादी पार्टी मुख्यालय पर भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

विश्वकर्मा जयंती आयोजन के मुख्य संयोजक एवं अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा पूर्व मंत्री श्री राम आसरे विश्वकर्मा इटावा करहल, कन्नौज और बांगरमऊ में विश्वकर्मा जयंती समारोहों में मुख्य अतिथि रहे। कई स्थानों पर शोभा यात्राएं भी निकलीं। श्री रामआसरे विश्वकर्मा ने आजमगढ़ स्थित अपने आवास पर पूजा का आयोजन भी किया।

श्री अखिलेश यादव ने विश्वकर्मा जयंती

पर सभी प्रदेशवासियों विश्वकर्मा, शर्मा तथा शिल्पकार समाज को बधाई देते हुए कहा कि सृष्टि के शिल्पकार के रूप में विश्वकर्मा जी की प्रसिद्धि है। इन्द्र के सबसे शक्तिशाली अस्त्र वज्र का निर्माण भी विश्वकर्मा भगवान ने ही किया था।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा पिछड़ों, वंचितों के खिलाफ है। समाजवादी सरकार में विश्वकर्मा समाज के लिए ग्राम सभा की जमीन का पट्टा, विश्वकर्मा, लोहार, बढ़ई समाज के नौजवानों को आईटीआई का प्रमाण पत्र, पुश्तैनी काम करने वालों को रोजगार के साथ विश्वकर्मा जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था। भाजपा सरकार ने पूजा पर्व पर घोषित सार्वजनिक अवकाश निरस्त कर विश्वकर्मा समाज का अपमान किया है।

समाजवादी पार्टी मुख्यालय लखनऊ में आयोजित भगवान विश्वकर्मा जयंती कार्यक्रम में विश्वकर्मा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री अच्छे लाल विश्वकर्मा सहित सर्वश्री राजा विश्वकर्मा, प्रदीप विश्वकर्मा, शिव प्रकाश विश्वकर्मा, विकास यादव, पायल सिंह, सुधीश कुमार, एस.के. राय, रिंकू विश्वकर्मा, इं0 संतोष, डॉ0 राम सेनही विश्वकर्मा, प्रो0 अनिल विश्वकर्मा, सुनील, कालिंदी भारद्वाज, राहुल प्रधान, अकरम बबलू, हरिकेश, अमन, प्रमोद, मनीष, गोलू विश्वकर्मा, इन्द्रसेन, नवनीत, विवेक, ऋषभ सिंह, डॉ हरिश्चन्द्र यादव, राधेश्याम सिंह यादव आदि प्रमुख की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

सहकारिता भवन, लखनऊ में आरक्षण बचाओं महा पंचायत कार्यक्रम में भी भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। इसमें सर्वश्री लालता प्रसाद निषाद, विशम्भर प्रसाद, डॉ0 राजपाल कश्यप, रमेश प्रजापति, किरन पाल कश्यप, शंखलाल मांझी, दयाराम प्रजापति, राम किशोर बिंद, रामदुलार राजभर, दयाशंकर निषाद, हरिश्चन्द्र प्रजापति तथा बी.के. कश्यप मुख्य रूप से उपस्थित थे।

मोहन सिंह को पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ पर दिनांक 22 सितंबर को वरिष्ठ समाजवादी नेता, पूर्व सांसद मोहन सिंह जी की 9वीं पुण्यतिथि मनायी गयी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने स्वर्गीय मोहन सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में मोहन सिंह जी ने सक्रिय योगदान किया था। उनके योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि समाजवाद ही सभी समस्याओं के समाधान का रास्ता है। समाजवादी सिद्धांतों के जरिए ही सभी वर्गों में खुशहाली और सम्पन्नता लायी जा सकती है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने समाज में नफरत पैदा किया है। भाजपा लोगों को लड़ाने का काम करती है। भाजपा राज में आम जनता की कोई सुनवाई नहीं है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार विद्वेष की भावना से काम करती है। भाजपा ने पांच साल की सरकार में विकास का कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया।

इस अवसर पर स्वर्गीय मोहन सिंह जी के परिवार से उनके दामाद श्री टी.एन. सिंह, नाती श्री प्रशांत कुमार सिंह सहित राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं श्री संजय लाठर के अतिरिक्त श्रीमती गजाला लारी पूर्व विधायक आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

याद किए गए गोविन्द बल्लभ पंत

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ में दिनांक 10 सितंबर को भारत रत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पंत जी की 135 वीं जयंती पर उन्हें भावांजलि अर्पित की गई। उनके चित्र पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर कहा कि महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में उनकी सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने किसानों, नौजवानों और समाज के कमजोर वर्ग के सम्मान और बेहतर जीवन की योजनाएं लागू की थी।

श्री यादव ने कहा कि पंत जी का पूरा जीवन देश सेवा के लिए समर्पित रहा। वे प्रखर वक्ता, प्रभावशाली राजनेता तथा कुशल प्रशासक थे। उन्होंने जब केन्द्र में गृह मंत्रालय का भार सम्हाला तब राजनीतिक स्थिति बिगड़ी हुई थी। आंतरिक उथल-पुथल थी। उन्होंने तब अपनी दृढ़ता से सभी समस्याओं का समाधान किया था। उनकी देश सेवा के लिए उन्हें भारतरत्न से सम्मानित किया गया।

कमाल यूसुफ मलिक नहीं रहे

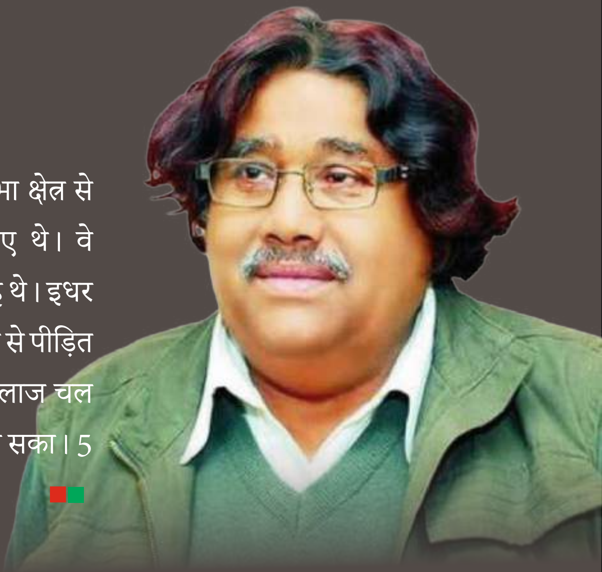

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने पूर्व मंत्री श्री कमाल यूसुफ मलिक के निधन पर गहरा शोक जताते हुए संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

श्री कमाल यूसुफ मलिक सिद्धार्थनगर जनपद के डुमरियागंज विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक निर्वाचित हुए थे। वे समाजवादी सरकार में मंत्री भी रहे थे। इधर काफी समय से वे कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। मेदांता अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था परन्तु उन्हें बचाया नहीं जा सका। 5 सितंबर को उनका निधन हो गया।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh
Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

कैबिनेट ने रेलवे की भूमि नीति में संशोधन को मंज़ूरी देते हुए रेलवे की भूमि को लीज़ पर देने की अवधि 5 साल से बढ़ाकर 35 साल कर दी है। जिसका सीधा लाभ केवल बड़े उद्योगपतियों को ही मिलेगा। इसमें कौन-सा जनहित है।

सरकार रेलवे की ज़मीन को रेवड़ी की तरह क्यों बाँट रही है?

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भाजपा कह रही है कि वो भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ अभियान छेड़ेगी...तब तो उनका घर ही खाली हो जाएगा...फिर सरकारों को गिराने-बनाने का पैसा भाजपा के पास कहाँ से आयेगा...कठपुतलियों को सोने के तार से कैसे खींचा जाएगा...आख़िर में ये अभियान भी जुमला बनकर रह जाएगा।

'भ' से भाजपा, 'भ' से भ्रष्टाचार।

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 03 Sep

एक दिन बुलडोज़र भी गायब हो जाएगा...

thelallantop

UP: साइकिल, बाइक या कार छोड़ो, चोरों ने बस स्टैंड से सरकारी बस पार कर दी, ड्राइवर सस्पेंड

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

ये सिर्फ़ आगरा का ही हाल नहीं है जहां पर सपा के समय शुरू हुई योजनाओं को राजनीतिक विद्वेषवश रोका गया है बल्कि पूरे उप्र में हर जगह यही हाल है। हर प्रोजेक्ट धूल चाट रहा है और सच्चे विकास की जगह भाजपा बस नाम बदलने की संकीर्ण राजनीति से लोगों को बरगला रही है।

भाजपा विकास-विरोधी है।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भाजपा ने बच्चों का वर्तमान और भविष्य तो चुरा ही लिया है... अब कम से कम ये काम तो न करें!

Translate Tweet

फिरोजाबाद में भाजपा पार्षद के घर में मिला मथुरा से चोरी गया बच्चा

प्लेटफार्म पर मां के पास से 24 अगस्त को हुआ था चोरी

पार्षद के घर पर मौजूद एसओजी।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

abp न्यूज़

UP News: बुलंदशहर के बीजेपी विधायक की मां से लूट, हथियार के बल पर बदमाशों ने दिया घटना को अंजाम

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

आसमान छूती महंगाई व बेरोज़गारी और रसातल में गयी उप्र की बदहाल क़ानून-व्यवस्था के ख़िलाफ़ सपा के विरोध-प्रदर्शन को भाजपा सरकार लाठी-पुलिस से रोकना चाह रही है। भाजपा सरकार का ये दमन साबित करता है कि ये मुद्दे सच में जनता को प्रताड़ित कर रहे हैं।

सपा जनता के साथ हमेशा खड़ी रहेगी।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

हमें नाज़ है अपने समर्पित कार्यकर्ताओं पर...

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

लोकतंत्र तबतक कारगर नहीं होगी जबतक मतदाता समझदारी से चुनाव नहीं करते। इसलिये लोकतंत्र का सुरक्षा कवच शिक्षा है।
—'फ्रैंकलिन रूजवेल्ट'

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

जो सरकार छात्रों को आत्मदाह के मुहाने पर ले जाए... उससे युवाओं को नाउम्मीदगी और हताशा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।

#भार_बन_गयी_भाजपा

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 08 Sep

NEET 2022 की परीक्षा में पूरे भारत में प्रथम स्थान हासिल करने वाली तनिष्का यादव व अन्य सभी उत्तीर्ण छात्रों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

447K views

965 · 4,197 · 32.5K

Akhilesh Yadav Retweeted

SamajwadiPartyMedia @M... · 08 Sep

बलिया के प्राइमरी स्कूल में शौचालय साफ करते बच्चे

योगी जी !
आपके राज में शिक्षा क्लास के बजाय शौचालय ... है ?

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

24 के चुनाव में अपने ख़िलाफ़ जनता के आक्रोश व जनहित में काम करनेवाले दलों की एकजुटता देखकर, भाजपा बौखला गयी है। इसीलिए अपने लाउडस्पीकर दलों से अनाप-शनाप बातें कहलवा रही है...इन लाउडस्पीकरों का माइक कहीं और है।

जनता को धोखा देनेवाली भाजपा और उसके नालबद्ध दलों को जनता सबक़ सिखाएगी।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अत्यंत दुखद!

उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री रामवीर उपाध्याय जी का निधन, अपूरणीय क्षति!

शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहन संवेदना। दिवंगत आत्मा को शांति दें भगवान।

भावभीनी श्रद्धांजलि।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

किसी भी सम्मानित धार्मिक-मज़हबी स्थान का सर्वे करवाना यदि न्यायपूर्ण नहीं है तो ये आस्थाओं को गहरी चोट पहुँचाता है।

इंसाफ़ सबसे बड़ा धर्म होता है।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 1d

महँगाई, बेरोज़गारी,बदहाल कानून-व्यवस्था और किसान, महिला व युवा उत्पीड़न जैसे जनहित के मुद्दों पर सपा के 'पैदल मार्च' के मार्ग में बाधा बनकर भाजपा सरकार साबित कर रही है कि वह जन आक्रोश से डरकर कितना असुरक्षित महसूस कर रही है।

सत्ता जितनी कमज़ोर होती है, दमन उतना ही अधिक बढ़ता है।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

कोई कह रहा है "उप्र में अभाव और अराजकता के लिए कोई स्थान नहीं है"...जनता पूछ रही है फिर आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

सच ये है कि भाजपा ने 'अभाव' के साथ-साथ हर चीज़ के 'भाव' बढ़ा दिए हैं और वो ख़ुद संविधान विरोधी काम करके 'अराजकता' की प्रतीक बन गयी है।
जनता के लिए भाजपा भार बन गयी है।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद महाराज जी का निधन अत्यंत दु:खद।

ईश्वर पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दे।

भावभीनी श्रद्धांजलि।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज आदरणीय आज़म खान साहब के साथ... एक कुशलक्षेम मुलाक़ात!

उनकी अच्छी सेहत के लिए दुआएँ।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

टाटा संस के पूर्व अध्यक्ष साइरस मिस्त्री जी की सड़क दुर्घटना में मृत्यु अत्यंत हृदय विदारक।

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति व समस्त शोकाकुल परिजनों को यह दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

संपूर्ण विश्व के हिंदी भाषियों और हिंदी प्रेमियों को 'हिंदी दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएँ!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज दिल्ली में... एक मुलाक़ात शिष्टाचार और कुशल-क्षेम के नाम।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

छात्रसंघ लोकतंत्र की प्राइमरी होते हैं।

इलाहाबाद विवि में छात्रसंघ बहाली की मांग हेतु 783 दिनों से क्रमिक अनशन व 400% फीस वृद्धि के विरोध में 7 दिनों से बैठे छात्र आमरण अनशन के समर्थन में विवि परिसर में निकाला गया 'छात्र जन आक्रोश मार्च' भाजपा सरकार से नाउम्मीदगी का प्रतीक है।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 64 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

राजनीति में नाराजगी नहीं, अपने-अपने सिद्धांत से बंधे लोग हैं।

- अखिलेश यादव